ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
University Grants Commission

MALAVIYA MISSION
TEACHER
TRAINING PROGRAMME

UGC- Malaviya Mission Teacher Training Centre (MMTTC)
National Institute of Educational Planning and Administration (NIEPA), New Delhi
&
Mohanlal Sukhadia University, Udaipur

Invite you to join

Two-Week Online Refresher Programme on 'Research Methods: Approaches & Practices'

7th March to 21st March, 2024

Objectives	➢ To develop interdisciplinary approach and analytical thinking for research ➢ To explain important aspects of Research Methodology ➢ To impart intense knowledge about different types of research designs and sampling methods ➢ To enhance understanding of data types and basic as well as advanced tools and techniques of classification and analysis ➢ To enable the participants to apply tools and techniques for their research and reporting of research outcome with the help of appropriate software. ➢ To provide them with hands-on experience on different software of data analysis. ➢ To improve writing of research paper & understand the publishing process.
Expected Outcomes	After successful completion of this online program, the participants will be able to conduct quality research and produce fruitful outcomes. They will conduct research in a scientific manner by using appropriate quantitative and qualitative methods and effectively analyse the data. They will be competent to report their research outcomes impressively and generate quality publications.
Incentive for Faculty Members	This Refresher Course conducted under the Malaviya Mission Teacher Training Programme shall be taken into consideration for the fulfilment of the requirements as laid down in the Career Advancement Scheme as per UGC Regulations on Minimum qualifications for appointment of teachers and other Academic Staff in Universities and Colleges and Measures for the Maintenance of Standards in Higher Education 2018.
Programme Duration and Contact Hours	It is a two-week programme to be held from 7th March to 21st March, 2024 with 72 contact hours (6 hours daily on 6 working days of each of the two weeks).
Fees	No fees will be charged from participants.
Registration	Participants can register for the programme by filling the **Google form** https://forms.gle/bXuoAoT2ynczdniy5 latest by 6th March, 2024.
Eligibility Criteria	The programme is open to faculty members (regular/permanent/ad-hoc /contractual/guest) from all disciplines at all levels.
Expectation from the participants	➢ The participants are required to attend all the sessions of the programme sincerely. **No leave will be granted during the programme**. ➢ The participants will be requested to submit their opinions and suggestions (feedback) on the various components of the program.

Patron

Prof. Shashikala Wanjari
Hon'ble Vice-Chancellor
NIEPA, New Delhi

Prof. Mona Khare
***Director,* UGC – Malaviya Mission**
Teacher Training Centre, NIEPA, New Delhi
Email : niepammcdir@niepa.ac.in

Prof. Sunita Mishra
Hon'ble Vice-Chancellor
MLSU, Udaipur

Contacts

Deputy Director, UGC – MMTTC

Dr. Amit Gautam
Associate Professor
Phone: 91- 011-26544889
Email: ddmmttcniepa@niepa.ac.in

Refresher Programme Coordinator

Dr. Neha Paliwal
Dept. of Economics, MLSU, Udaipur
Mb.N.-9829858589
Email: neha.paliwal03@gmail.com

Technical

Sh. Chandra Kumar M.J.
Systems Analyst
Phone: 91- 011-26544879
Email: chandrakumar@niepa.ac.in

"Microbial Techniques" workshop report

Department of Microbiology and Biotechnology have organized a workshop on "**Microbial Techniques**" on 18 October, 2023 for the B. Pharma students of Asian College of Pharmacy, Udaipur under the aegis of Azadi ka Amrit Mahtosav.

The objective of this workshop was to combine the theoretical knowledge of students along with the practical exposure. In this workshop twenty students have participated and hands on training includes experiments related to basic microbial techniques like gram staining, carbohydrate fermentation, isolation of microbes and antibiotic susceptibility test.

Students have visited research laboratories of the department and seen the instrumentation facility also.

Dr. Namita Ashish Singh

Coordinator

Dr. Harshada Joshi

Course-Director

3- Two Weeks Training Programme-III

On

"Research Methodology Using SPSS Software"

'Research Skill Development in Social Sciences, Communication & Management'

Organized by Dept. of Sociology under RUSA 2.0 project

(8.01.2024 to 22.01.2024)

4- Two Weeks Training Programme-IV

On

"Research Methodology and Writing Skills"

'Research Skill Development in Social Sciences, Communication & Management'

Organized by Dept. of Sociology under RUSA 2.0 project

(5.02.2024 to 19.02.2024)

5- Two Weeks Training Programme-V

On

"Skill Development in Social Sciences"

'Research Skill Development in Social Sciences, Communication & Management'

Organized by Dept. of Sociology under RUSA 2.0 project

(18.11.2024 to 01.12.2024)

जनजातीय अध्ययन : शोध प्रविधि एवं तकनीकी

राष्ट्रीय कार्यशाला

दिनांक : 9-10 मार्च, 2024

आयोजक :

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

ट्राईबल रिसर्च एंड नॉलेज सेंटर, नई दिल्ली

वनवासी कल्याण आश्रम, उदयपुर

प्रतिवेदन

जनजातीय अध्ययन : शोध प्रविधि एवं तकनीक विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 9-10 मार्च, 2014 को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर, माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर, ट्राईबल रिसर्च एंड नॉलेज सेंटर नई दिल्ली तथा वनवासी कल्याण आश्रम, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के बप्पा रावल सभागार में हुआ। इसका उद्घाटन 9 मार्च को सुबह 10:00 बजे अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस सत्र में अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय संगठन मंत्री अतुल जोग, जनजातीय क्षेत्रीय विकास मंत्री श्री बाबूलाल खराड़ी, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर सुनीता मिश्रा, ट्राईबल रिसर्च एवं नॉलेज सेंटर नई दिल्ली के महासचिव प्रो. विवेक दुबे और कार्यक्रम संयोजक डॉ. मन्ना लाल रावत का मार्गदर्शन मिला।

कारक्राम का आरंभ दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना से हुआ। विश्वविद्यालय के कुलगीत के साथ अतिथियों का स्वागत एवं उद्घाटन भाषण, कार्यशाला का परिचय के साथ कार्यशाला में पधारने के लिए सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया गया।

इस उद्घाटन सत्र में अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय संगठन मंत्री अतुल जोग ने कहा कि प्राचीन काल के शासकों तथा कालांतर में ब्रिटिश शासन ने अपने स्वार्थ के लिए जनजातियों को गरीब बनाया। बदनाम करने के लिए क्रिमिनल घोषित

किया और पिछड़ा साबित किया। उन्होंने कहा कि आदिवासियों के बारे में अब तक जो इतिहास में पढ़ाया गया, वह गलत था। हमें आदिवासियों की अस्मिता को समझना और सही तरीके से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।

जनजातीय क्षेत्रीय विकास मंत्री श्री बाबूलाल खराड़ी जी ने कहा कि आजादी के बाद न तो जनजातियों का समुचित विकास हुआ और न ही उन पर महत्वपूर्ण शोध हुए। आज की जरूरत है कि आदिवासी समाज को जागृत किया जाए और उनके इतिहास को सही परिपेक्ष्य में लिखा और पढ़ा जाए। श्री खराड़ी ने कहा कि जनजाति समाज स्वाभिमानी समाज है। उन्हें अपने पैरों पर खड़ा कर स्वावलंबी बनाना होगा।

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुनीता मिश्रा ने कहा कि मैंने आदिवासी समाज को बहुत करीब से देखा है। ट्राईबल रिसर्च एवं नॉलेज सेंटर नई दिल्ली के महासचिव प्रोफेसर विवेक दुबे ने कहा कि हमारा संस्थान पूरे देश में जनजाति चिंतन से जुड़े विषयों पर लगातार कार्यशालाएं कर रहा है ताकि जनजातियों के विकास के लिए चिंतन प्रवाह को आगे बढ़ाया जा सके। कार्यक्रम संयोजक डॉ. मन्ना लाल रावत ने कहा कि आदिवासी अध्ययन नहीं अनुभूति का विषय है क्योंकि आदिवासी समाज सदैव स्वाभिमानी समाज रहा है और इसके उत्थान और विकास के लिए जितने प्रयास होने चाहिए उतने नहीं हुए। कार्यक्रम का संचालन डॉ बालूदान बारहट ने किया और धन्यवाद डॉ. नवीन नंदवाना ने दिया।

प्रथम सत्र

चाय के लिए ब्रेक कार्यशाला का प्रथम सत्र 11: 45 पर प्रारंभ हुआ। उद्घाटन के बाद प्रथम तकनीकी सत्र में प्रो. फीरमी बोडो ने कहा कि जनजाति समाज को उन्हीं की नजर से देखने की आवश्यकता है। उन्होंने अपने वक्तव्य में मिजो और मणिपुरी भाषाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हमें जनजाति समाज की Thought और understanding को समझना होगा। हमारी जनजातियां इतने वर्षों से यूं ही नहीं संघर्ष कर रही हैं। हमें जनजाति समाज को उनकी आंखों से देखने की आवश्यकता है।

द्वितीय सत्र

भोजनोपरांत दूसरा सत्र 2:00 बजे प्रारंभ हुआ जिसमें मुख्य वक्ता श्री राजाराम कटारा, श्री गिरीश कुबेर जी एवं प्रोफेसर एम.एस. राठौड़ थे। इस सत्र का विषय 'जनजातीय

अस्तित्व' था। इस सत्र में मुख्य वक्ता श्री राजाराम कटारा ने कहा कि जनजातीय अस्मिता और अस्तित्व पर शोध व विमर्श होना सुखद है। जनजातियों की अस्मिता ठीक से जानने पर ही हम उनके कल्या (विकास) की ठीक से योजना बना पाएंगे। मात्र भौतिक उन्नति से ही जनजाति कल्याण को जोड़ लिया जाता है, यह उचित नहीं है। इस दृष्टि के कारण कई विषय छूट जाते हैं। अब तक इस समाज के परंपरागत ज्ञान को ठीक से नहीं समझा गया। इस कारण यह स्वावलंबी समाज बेरोजगार हो गया। स्वास्थ्य, बीज संरक्षण, रस्सी निर्माण, प्राकृतिक चिकित्सा आदि का जो ज्ञान इस समाज के पास है, इनके इस ज्ञान पर ध्यान देना अपेक्षित है। हमें आदिवासी समाज की आध्यात्मिकता को समझना होगा। जनजाति समाज का धर्म व आध्यात्म देने की परंपरा से जुड़ा है। अपने भजन और आरती में यह 'स्वयं के कल्याण के स्थान पर लोक कल्याण' की कामना व्यक्त करता है।

इस सत्र में श्री गिरीश जी कुबेर जी कहा कि जनजाति अस्मिता की बात केवल जल, जंगल, जमीन की लड़ाई तक नहीं है। उन्होंने 1871 क्रीमिनल एक्ट की बात भी की। उन्होंने प्रोटेक्शन ऑफ़ लेंड, कल्चर और लेंग्वेज पर भी अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि जनजातियों की सक्सेस स्टोरी लिखी जानी चाहिए। उन्होंने जमीन और पुनर्वास के विषयों पर विचार व्यक्त किए। नियमों और योजनाओं की जानकारी के अभाव के कारण सरकारी योजनाओं का लाभ वहां तक नहीं पहुंच पाता है।

वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रो. मदन सिंह राठौड़ ने कहा कि जनजातियों के लिए किया गया विकास विकारग्रस्त न हो। आपने वसुधैव कुटुंबकम की महता बताई। साथ ही नीति निर्माण और क्रियान्वयन के बीच का गैप खत्म करने पर बल दिया।

तृतीय सत्र

इस कार्यशाला का तीसरा सत्र 3:15 बजे प्रारंभ हुआ जिसके मुख्य वक्ता प्रोफेसर विवेक कुमार, श्री वैभव सुरंगे और श्री एस.एल. परमार ने जनजातीय विकास पर अपनी बात रखी।

श्री वैभव सुरंगे ने कहा कि विकास के साथ जनजातीय जीवन को ध्यान में रखने की महती आवश्यकता है। हम जंगल काटकर विकास की बात करते हैं, फिर पेड़ लगाने की चिंता करते हैं। हैप्पीनेस इंडेक्स को ध्यान में रखते हुए विकास के पथ पर अग्रसर होना होगा। पर्यावरण के अनुकूल विकास का मॉडल बनाना होगा। हमारे पास कम्युनिटी का मॉडल बचा नहीं है, जनजातियों के पास अभी बचा है। हम जनजाति समाज की स्थिति को जाने बिना

मत तय कर लेते हैं, जो उचित नहीं है। शोधार्थी को अपने शोध के माध्यम से सरकारी योजनाओं का सही मूल्यांकन कर उसके निष्कर्ष सरकार तक पहुंचाने होंगे। विकास योजनाओं की असफलता का भी ठीक से मूल्यांकन करना होगा। श्री एस.एल. परमार ने कहा कि आजादी के बाद विकास दिखता है, पर सवाल गुणवत्ता का है। हमारे यहां शिक्षा के क्षेत्र में संख्या तो बढ़ी है, पर स्तर नहीं बढ़ा। प्रो. विवेक कुमार ने 'जनजातीय समाज की प्राचीन परंपरा और विकास' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि हम जनजातीय समाज के विकास के लिए चिंतित हैं बल्कि हमें विकास के सही मॉडल को समझना होगा।

प्रो. नीरज शर्मा ने सनातन दर्शन, शांति और समन्वय की विराट प्रकृति पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि विवेक पूर्ण मानवीय आचरण जरूरी है। वैदिक दर्शन में प्रकृति की उपासना महत्वपूर्ण है। आपने नारायण दशावतार की बात करते हुए प्रकृति से विकास क्रम को दर्शाया। प्राकृतिक शक्तियों के मानवीकरण और पंच देवोपासना की चर्चा की और कहा कि सनातन का मूल एक है। सनातन वैदिक अस्मिता, आदिवासी आस्तिकता के बिना अपूर्ण है। सनातन वैदिक चिंतन प्रवाह आदिवासी मूल्यों से अभिन्न है। हमारी सनातन संस्कृति वन्य जीवन से अभिन्न है।

प्रो. सुरेश अग्रवाल ने वैदिक धर्म और भक्ति -पर अपने विचार रखे। संत मावजी के चौपड़े, वाणियों में निहित भविष्यवाणियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने वैदिक संस्कृति व जनजातीय संस्कृति, गोविंद गुरु के प्रवचन और अवदान को रेखांकित किया। उन्होंने विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम और जनजातीय विद्यार्थियों के ड्रॉपआउट के कारणों पर प्रकाश डाला। वहीँ प्रो. दिग्विजय भटनागर ने समन्वय के दर्शन, शिक्षा को बढ़ाने पर बल दिया।

दूसरा दिन : 10 मार्च 2024

प्रथम सत्र

कार्यशाला के दूसरे दिन 10 मार्च, 2024 को सुबह 10:00 बजे प्रथम सत्र प्रारंभ हुआ जिसमें मुख्य वक्ता श्री भगवान सहाय जी, प्रो. बिनोद कुमार और डॉ. प्रियासी दत्ता थे।

प्रो. बिनोद कुमार ने कहा कि हम अपनी कहानी स्वयं नहीं लिख पाए तो कोई और उसे अपने तरीके से लिख गया। इस सत्र में डॉ. बिनोद कुमार ने Curriculum Design पर बात की। वहीँ आदिवासी जीवन के विषय में Reclaiming Narrations & Documentations पर अपने विचार रखे। इस सत्र में श्री भगवान सहाय जी ने जनजातीय

संस्कृति और सनातन संस्कृति को अभिन्न बताया और कहा कि जनजातीय संस्कृति रक्षण, पोषण और संवर्धन होना चाहिए। हमें जनजातियों के बीच सकारात्मकता लेकर जाना होगा।

द्वितीय सत्र

इस दिन का दूसरा सत्र 11:30 बजे प्रारंभ हुआ जिसमें 'शोध प्रविधियां' विषय पर प्रकाश डाला गया। इस सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. अनिल कोठारी ने कहा कि जनजातीय विषयों पर अनुसंधान और शोध करने से पहले उनसे जुड़ाव जरूरी है। पश्चिमी देशों के प्रबंधन के तरीके हमारे देश में हूबहू लागू नहीं किए जा सकते हैं। भारतीय जनजातियों में कई विषयों पर शोध की संभावना है। इसके बाद भोजन अवकाश हुआ।

समापन समारोह

इस कार्यशाला का समापन सत्र अपराह्न 2.00 बजे प्रारंभ हुआ जिसके अध्यक्ष प्रो. बी.पी, शर्मा, मुख्य अतिथि श्री हर्ष चौहान और श्री सुधीर द्वे थे। श्री सुधीर दवे ने जनजातीय विकास विभाग की गतिविधियों और योजनाओं की जानकारी दी। श्री वारसिंह निर्देशक टी.आर.आई. ने टी.आर.आई. की गतिविधियों, उद्देश्यों एवं महत्वपूर्ण योजनाओं के बारे में बताया।

श्री हर्ष चौहान ने कहा कि जनजातीय समाज को लेकर अलग-अलग नेरेटिव हैं, उस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने Why Tribal Research ? विषय पर अपने विचार रखे और कहा कि जनजातीय समाज को हम ठीक से समझ नहीं पाए। अंग्रेजों की दृष्टि से हम इस समाज को देखते हैं, जो ठीक नहीं है। हमारी संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में इस पर अध्ययन करेंगे तो हम इस समाज को समझ पाएंगे। उन्होंने कहा कि नगरीय जीवन में आज आदिवासी को लेकर जो छवि बनी हुई है वह सोचनीय है। औपनिवेशिक मानसिकता से लिखा गया साहित्य और बनी हुई फिल्में आज भी आदिवासियों की छवि बदल नहीं सकीं। आज आंकड़े और यथार्थ में भेद दिखता है। अतः इस समाज को आधार बनाकर शोध एवं अध्ययन की महती आवश्यकता है। दृष्टि, पद्धति और संकल्प ठीक होने पर ही जनजातीय समाज पर सही शोध संभव है।

प्रो. बी.पी. शर्मा ने कहा कि सबसे सभ्य और सुसंस्कृत समाज जनजातीय समाज है। 'गवरी' नृत्य के माध्यम से हम उनकी श्रद्धा और अनुशासन देख सकते हैं। आस्था और समर्पण हम उनके इस वार्षिक पर्व में देख सकते हैं। गवरी के एक-एक पात्र पर शोध की

अनेक संभावनाएँ हैं। जनजातीय समाज का हमने ठीक से अध्ययन अभी तक नहीं किया है। जनजातियों के पर्वों व मान्यताओं पर भी शोध की आवश्यकता है। इस समापन समारोह का संचालन डॉ. विनीता राजपुरोहित ने किया और आभार डॉ. बालूदान बारहठ ने व्यक्त किया किया। राष्ट्रगान के साथ इस कार्यशाला का समापन हुआ।

ooo

REPORT OF

ONE DAY WORKSHOP ON

“ACCOUNTING FOR HOTELS”

[MAY 9, 2024 THURSDAY]

ORGANIZED BY

Department of Accountancy and Business Statistics,

Mohanlal Sukhadia University, Udaipur (Raj.)

Department of Accountancy and Business Statistics
University College of Commerce & Management Studies
Mohanlal Sukhadia University
(NAAC ACCREDITED "A" Grade State University)
Organising

WORKSHOP
ON
ACCOUNTING FOR HOTELS

Thursday, May 9, 2024 at 11:00 am
Venue : Computer Lab (Room No. 402)
University College of Commerce & Management Studies

Chief Patron	Co-Patron	Workshop Director	Workshop Secretary
Prof. Sunita Mishra	**Prof. B.L. Verma**	**Prof. Shurveer S. Bhanawat**	**Dr. Shilpa Vardia**
Hon'ble Vice Chancellor	Dean and Faculty Chairman	Head	Assistant Professor
MLSU, Udaipur	UCCMS, MLSU, Udaipur	Department of ABST	Department of ABST
		MLSU, Udaipur	MLSU, Udaipur

Registration Link : https://forms.gle/tysLUyZ5wrCe7euS8

One day workshop on "**Accounting for Hotels"** was organized by Department of Accountancy and Statistics , University College of Commerce and Management Studies , MohanlalSukhadia University. The workshop was organized under the guidance of Honorable Vice chancellor of the University **Professor Sunita Mishra** and Dean of University, **Professor B.L Verma.**

Organizing Secretary of the workshop **Dr. Shilpa Vardia** said that the main objective of conducting this workshop is to provide practical Knowledge of " **Accounting for hotels**" and also increase there employment opportunities in hotel industry. Further , she said that there are immense possibilities of tourism in Udaipur. Hotel industry is biggest industry in Udaipur in which an investment of 1000 crores and about 1000 employees are working. She also focused significance of hotel accounting in present era and different services provided by hotel industry.

Thereafter, Department Head **Dr. Shurveer Singh Bhanawat** , also motivated students on creating their own employment and form groups and develop accounting skills and plan to start a start up. He enlightened the knowledge of participants by providing in depth knowledge about the concept of Hotel accounting.

The keynote speaker of present workshop **Mr. Piyush Soni**, made the participants aware of the introduction of Hotel Business Accounting, its types, license requirement and tax system through Power point presentation. Along with this, he also gave training of practical hotel accounting through case study related to hotel through tally software.

The present workshop was very informative and interactive as it ended with quiz and question and answer round that enabled the participants to put their queries which were very well explained and answered by resource person. Lastly , **E- Certificate** were provided to all **51** participants who attended the present workshop.

The Faculty members of the department, Assistant Professor **Dr. ShilpaLodha, Dr. Asha Sharma, Dr. ParulDashora, Dr. PushprajMeena**were present in this workshop. Along with this , Guest faculty of Accountancy department **Dr. RimpiSaluja, Dr**. **Nidhibhanawat , Dr. Priyanka Jain** and **Dr**. **Ruchika Jain** were also present.

Google
India
UCCMS , MLSU, Opposite Hotel R
Lat 24.581446°
Long 73.712386°
09/05/24 11:55 AM GMT +05:30

Google
India
UCCMS , MLSU, Opposite Hotel R
Lat 24.581446°
Long 73.712386°
09/05/24 11:59 AM GMT +05:30

Google
India
UCCMS , MLSU, Opposite Hotel R
Lat 24.581446°
Long 73.712386°
09/05/24 11:57 AM GMT +05:30

Google
India
UCCMS , MLSU, Opposite Hotel R
Lat 24.581446°
Long 73.712386°
09/05/24 01:47 PM GMT +05:30

BACHELOR OF VOCATION
Google
India
UCCMS , MLSU, Opposite Hotel R
Lat 24.581446°
Long 73.712386°
09/05/24 12:21 PM GMT +05:30

Google
India
UCCMS , MLSU, Opposite Hotel R
Lat 24.581446°
Long 73.712386°
09/05/24 12:22 PM GMT +05:30

Google
India
UCCMS , MLSU, Opposite Hotel R
Lat 24.581446°
Long 73.712386°
09/05/24 12:01 PM GMT +05:30

स्टार्टअप सृजित कर रोजगार के अवसर पैदा करने होंगे

सुविवि में लेखांकन पर कार्यशाला

ब्यूरो नवज्योति/ उदयपुर।

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के लेखांकन एवं सांख्यिकी विभाग द्वारा गुरुवार को होटल लेखांकन पर कार्यशाला का आयोजन कंप्यूटर लैब में किया गया। कुलपति प्रो. सुनिता मिश्रा एवं विश्वविद्यालय वाणिज्य एवं प्रबन्ध संकाय के अधिष्ठाता प्रो. बीएल वर्मा एवं व विभागाध्यक्ष प्रो. शूरवीर सिंह भाणावत के मार्गदर्शन में इस कार्यशाला का आयोजन किया गया। आयोजन सचिव डा. शिल्पा वर्डिया ने बताया कि उदयपुर में लेखांकन में रोजगार की संभावना भरपूर है। अतः लेखा विद्यार्थियों के लिए यह कार्यशाला उनके रोजगार के अवसरों में अभिवृद्धि करेगी। विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. शूरवीर सिंह भाणावत ने कहा कि स्वयं के रोजगार के सृजन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इसके लिए लेखांकन एवम टैक्सेशन

में कौशल विकसित करके स्टार्ट अप शुरू करने की योजना बनानी चाहिए। संचालन शौयगढगढ़ रिसॉर्ट के अकाउंट्स एग्जीक्यूटिव पीयूष सोनी ने किया। सुखाड़िया विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. सुनिता मिश्रा एवं विश्वविद्यालय वाणिज्य एवं प्रबन्ध संकाय के अधिष्ठाता प्रो. बीएल वर्मा ने कार्यशाला के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की।

DEPARTMENT OF ACCOUNTANCY AND BUSINESS STATISTICS
UNIVERSITY COLLEGE OF COMMERCE AND MANAGEMENT STUDIES
MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSITY, UDAIPUR

Workshop on Accounting For Hotels on 9 May, 2024 at 11 am

Sr. no.	Name	Mobile No.	Signature	CLASS			
				M.Com	MFC	M.Voc (ATA)	Other
1	Vikash Kumar	7079840252	Vikash			✓	
2	Nayan Gurwani	8209363307	[illegible]			·	✓
3	Hussain Bhukhadiwala	7427007162	[illegible]	✓			
4	Komal Bhagwatilal Nagda	9137509702	[illegible]	✓			
5	Vivek Bhati	9953763198	[illegible]	✓			
6	Chinmay Jain	9799185787	[illegible]	✓			
7	Dr. Nidhi Bhapawat Murdia	9414917061	Nidhi				✓
8	Shubdutt Singh Rao	9785567574	[illegible]		✓		
9	Ritika Sahu	8290115874	Ritika		✓		
10	Khushi Mod	7300271346	Khushi		✓		
11	Divya Kalal	8955302866	Divya		✗	✓	
12	Komal Nagda	8824149482	Komal		✗	✓	
13	Meenakshi Paliyal	8769991269	[illegible]				✓
14	Jaya kumari	8239376763	[illegible]		✓		
15	Mayur Ved	9588296278	[illegible]			✓	
16	[illegible] Singh Jhala	8890851129	[illegible]			✓	
17	DIKSHA PUROHIT	7014527813	Diksha			✓	
18	Mudita Bhatnagar	8905741089	[illegible]			✓	

Scanned with AltaScan

DEPARTMENT OF ACCOUNTANCY AN[illegible]SS STATISTICS
UNIVERSITY COLLEGE OF COMMERCE AND [illegible]ANAGEMENT STUDIES
MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSITY, UDAIPUR
Workshop on Accounting For Hotels on 9 May, 2024 at 11 am

Sr. no.	Name	Mobile No.	Signature	CLASS			
				M.Com	MFC	M.Voc (ATA)	Other
19	Aayush Maheshwari	9649755098	Aayush		✓		
20	Darshan Bhatia	8560942464	Darshan		✓		
21	Neeraj Nagda	9057092628	Neeraj		✓		
22	Ritika Choudhary	9001973704	Ritika	✓			
23	Vidhi Vyas	6378128273	Vidhi	✓			
24	MOHD. Shams Khan	7424946408	Khan		✓		
25	Mitesh Kumar Meena	8529583229	mitesh	✓			
26	VIPIN KUMAR DAMOR	8107652586	VIPIN KUMAR	✓			✓
27	Shilpa Lodha		[illegible]				
28	[illegible]	[illegible]	Tejas	✓			
29	Anjali Bhil	8690039954	Anjali	✓			
30	Aamna Banu	8107104491	Aamna Banu	✓			
31	Khushi Sharma	9929671624	Khushi	✓			
32	Dipanshu Rathore	7737193664	[illegible]	✓			
33	Neha Shaktawat	9521694587	Neha Shaktawat	✓			
34	Nupur Paliwal	9079101100	Nupur	✓			
35	Hema Mali	9602355715	Hema	✓			
36	Ashok Singh Rawat	9929713767	[illegible]				PhD ✓

DEPARTMENT OF ACCOUNTANCY AND BUSINESS STATISTICS
UNIVERSITY COLLEGE OF COMMERCE AND MANAGEMENT STUDIES
MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSITY, UDAIPUR

Workshop on Accounting For Hotels on 9 May, 2024 at 11 am

Sr. no.	Name	Mobile No.	Signature	CLASS			
				M.Com	MFC	M.Voc (ATA)	Other
37	ASHok KUMAR SHARMA	9664417552	[illegible]				✓
38	Dr Pimple Salya	9982325821	[illegible]				
39	Dr Rupka Jain	8169924184	[illegible]				✓
40	Dr Rushika Jain	9462436369	[illegible]				
41	Durwin Nagda	9887149827	[illegible]				
42	Hiran Chundawat	7742329615	[illegible]				
43	Rohit Sharma	9024820471	[illegible]				
44	Ronak Jain	7737120774	[illegible]				
45	Bhanu Singh	9785317004	[illegible]				
46	Huzefa Bohra	8290575485	[illegible]				
47	[illegible] Bhatnagar	[illegible]4583518	[illegible]				
48	Anil Kumar Meena	7877932562	[illegible]		✓		
49	Rutik Chawla	8875133122	[illegible]		✓		
50	Dr Asha Sharma	8005516509	[illegible]				✓
51	Dr Shilpa Vardia		[illegible]				

(Shilpa Vardia)

[illegible] : [illegible]*

[illegible]

[illegible] ,[illegible]

[illegible]. [illegible].[illegible],[illegible]

[illegible] ,[illegible] ,[illegible],[illegible],[illegible],[illegible],[illegible],[illegible]

[illegible]

[illegible] 450 [illegible]

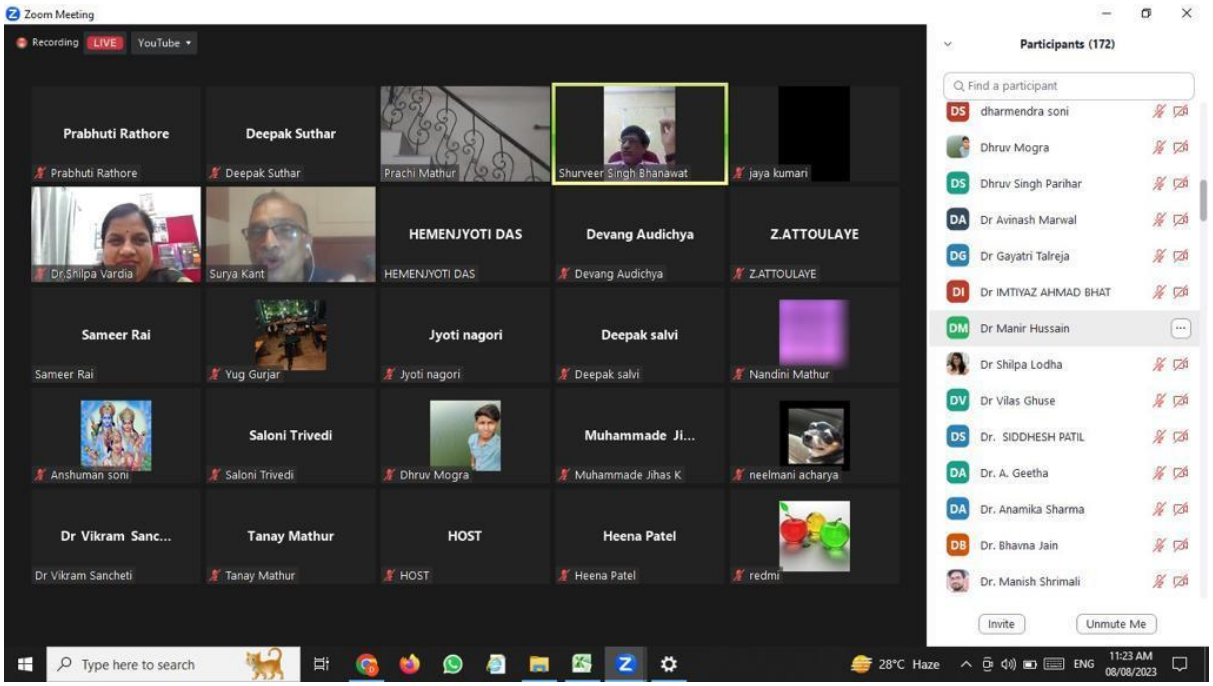
Zoom Meeting
Recording
LIVE
YouTube
Prabhuti Rathore
Deepak Suthar
Prachi Mathur
Shurveer Singh Bhanawat
jaya kumari
Dr.Shilpa Vardia
Surya Kant
HEMENJYOTI DAS
Devang Audichya
Z.ATTOULAYE
Sameer Rai
Yug Gurjar
Jyoti nagori
Deepak salvi
Nandini Mathur
Anshuman soni
Saloni Trivedi
Dhruv Mogra
Muhammade Ji...
neelmani acharya
Dr Vikram Sanc...
Tanay Mathur
HOST
Heena Patel
redmi
Participants (172)
Find a participant
dharmendra soni
Dhruv Mogra
Dhruv Singh Parihar
Dr Avinash Marwal
Dr Gayatri Talreja
Dr IMTIYAZ AHMAD BHAT
Dr Manir Hussain
Dr Shilpa Lodha
Dr Vilas Ghuse
Dr. SIDDHESH PATIL
Dr. A. Geetha
Dr. Anamika Sharma
Dr. Bhavna Jain
Dr. Manish Shrimali
Invite
Unmute Me
Type here to search
28°C Haze
ENG
11:23 AM
08/08/2023

seminar Report

हिंदी साहित्य, सिनेमा, समाज तथा अन्य माध्यम

उद्घाटन सत्र

दिनांक *06·10·2023* समय प्रातः *11:00* से *12:30*

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् एवं मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में *06-07* अक्टूबर,*2023* को हिंदी साहित्य, सिनेमा, समाज तथा अन्य माध्यम विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस संगोष्ठी में देश के कई जाने-माने टीवी, वेब सीरीज तथा सिने कलाकार, निर्देशक, संगीतकार तथा पटकथा लेखक विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित हुए। कई विश्वविद्यालयों से आचार्य, सह आचार्य, सहायक आचार्य, शोधार्थी एवं विद्यार्थी भी इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए । इस संगोष्ठी का शुभारंभ *06*अक्टूबर,*2023* शुक्रवार को स्वामी विवेकानंद सभागार में हुआ । उदघाटन सत्र में विभागाध्यक्ष डॉ· नीतू परिहार ने स्वागत उद्बोधन दिया । प्रसिद्ध रंगकर्मी, सिने-टीवी कलाकार अखिलेंद्र मिश्र ने मुख्य अतिथि के रूप में अपना उद्बोधन दिया । उन्होंने बताया कि भगवान शिव के डमरू से *14* सूत्र निकले । इन्हीं सूत्रों से सारी विद्याएँ, विधाएं और भाषाएँ निकली। संस्कृत भी इन्हीं में से एक है, जिसकी हिंदी समेत कई बेटियां हैं।उन्होंने कहा कि सृष्टि प्रदत्त भाषा है संस्कृत और हिंदी।

आयोजन सचिव डॉ· नीता त्रिवेदी ने कहा कि हम उस पीढ़ी के प्रतीक हैं जो टीवी पर चित्रहार, रामायण, चंद्रकांता संतति जैसे सीरियल देखते हुए बड़े हुए हैं। उन्होंने सिनेमा के दौर को याद करते हुए कहा कि उस समय सिनेमा मनोरंजन का साधन होने के साथ हमें भावनात्मक और रहस्य की दुनिया से भी जोड़े रखता था। विशिष्ट अतिथि प्रो· गौरव वल्लभ ने बताया कि हिंदी भाषा में जो अपनत्व, ममता, प्रेम, करुणा, वात्सल्य है, वह दुनिया की किसी भी भाषा में महसूस नहीं होता। कार्यक्रम की अध्यक्ष प्रो· सुनीता मिश्रा ने कहा कि ऐसी संगोष्ठी समय की मांग है।मुख्य वक्ता प्रो· पुनीत बिसारिया ने कहा कि साहित्य के बिना समाज नहीं है और समाज के बिना सिनेमा नहीं है।सभी एक दूसरे के बिना अधूरे हैं।विशिष्ट अतिथि प्रो· नीरज शर्मा ने कहा कि अगर हिंदी भाषा का एक शब्द भी आपके भीतर समा जाए तो आपको उच्च सम्मान मिल सकता है। इस अवसर पर डॉ· आशीष सिसोदिया की पुस्तक 'मेवाड़ी लोककला एवं लोकगीत' का विमोचन किया गया।तेजस पूनिया की दो पुस्तकों का भी विमोचन हुआ।अतिथियों को स्मृति-चिह्न भी भेंट किए गए। डॉ· नवीन नंदवाना ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

व्याख्यान सत्र

दिनांक *06·10·2023* समय *12:35* से *1:30* तक

स्थान : विवेकानंद सभागार, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

नाटक, सिनेमा, साहित्य और समाज

उद्घाटन सत्र के बाद व्याख्यान सत्र प्रारंभ हुआ जिसका संचालन डॉ॰ मुन्ना कुमार पांडे ने किया। इस सत्र में 'नाटक, सिनेमा, साहित्य और समाज' विषय पर प्रसिद्ध रंगकर्मी एवं अभिनेता अखिलेंद्र मिश्र ने अपना व्याख्यान दिया। इस सत्र में डॉ॰ मुन्ना कुमार पांडे के साहित्य एवं सिनेमा से संबंधित सवालों के जवाब अखिलेंद्र मिश्र ने अपने अनोखे अंदाज़ में दिए साथ ही उन्होंने अपनी पुस्तक 'अखिलामृतं' से कुछ कवितायें भी सुनाई।

प्रथम तकनीकी सत्र

दिनांक *06·10·2023* समय *2:30* से *4:00* तक

स्थान : विवेकानंद सभागार, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

साहित्य, समाज तथा अधुनातन माध्यम

*(*क्षेत्रीय सिनेमा तथा वेब सीरीज, प्रिंट मीडिया, शॉर्ट मूवीज तथा टीवी सीरियल*)*

भोजन के पश्चात् प्रथम तकनीकी सत्र प्रारंभ हुआ।इस सत्र की अध्यक्षता सोमेन्द्र हर्ष,निदेशक *(*RIIF*)*, जयपुर ने की। वक्ता के रूप में आदित्य ओम *(*तमिल एवं हिंदी फिल्म निर्देशक*)*, तरुण डुडेजा *(*लेखक एवं निर्देशक*)*, चिन्मय भट्ट *(*फिल्म निर्देशक, गीतकार, संगीतकार एवं पटकथा लेखक*)*, जिगर नागदा *(*निर्माता, निर्देशक एवं लेखक*)* एवं कुणाल मेहता *(*फिल्म निर्देशक, अभिनेता एवं लेखक*)* ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र में साहित्य, समाज तथा अधुनातन माध्यम जिसके अंतर्गत क्षेत्रीय सिनेमा तथा वेब सीरीज, प्रिंट मीडिया, विज्ञापन, शोर्ट मूवीज तथा टीवी सीरियल पर विस्तृत चर्चा हुई जिसमें दर्शकों की जिज्ञासाओं का भी प्रतिउत्तर दिया गया। इस सत्र में विषय से संबंधित *06* पत्र आए।

साहित्यिक कार्यक्रम

दिनांक *06·10·2023* समय सायं *7:30* से *9:00*

स्थान : बप्पा रावल सभागार, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

शब्द ब्रह्म

*(*आखर से आख्यान की यात्रा*)*

06 अक्टूबर,*2023* की शाम को *7:30* बजे से साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया| इसका विषय रखा गया - **शब्द-ब्रह्म *(*आखर से आख्यान की यात्रा*)*** | इस कार्यक्रम में सिनेमा से संबंधित लेखक से संवाद किया गया | इस कार्यक्रम में मशहूर पटकथा लेखक सत्य व्यास से उनकी पुस्तक **'मीना मेरे आगे'** पर चर्चा की गई| साथ ही फिल्म विश्लेषक तेजस पूनिया से भी उनकी पुस्तक पर चर्चा हुई| इस कार्यक्रम का संचालन डॉ॰ मुन्ना कुमार पांडे ने किया|

द्वितीय तकनीकी सत्र

दिनांक *07*॰*10*॰*2023* समय प्रात*: 10:30* से *11:30*

स्थान *:* बप्पा रावल सभागार, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

सिनेमा तथा अन्य माध्यमों का समाज तथा साहित्य से अंतर्संबंध

07 अक्टूबर,*2023* को प्रातः *10:30* बजे से द्वितीय तकनीकी सत्र प्रारंभ हुआ| इस सत्र की अध्यक्षता प्रो॰ संजीव दुबे *(*अध्यक्ष हिंदी अध्ययन केंद्र, गुजरात*)* ने की|इसमें वक्ता के रूप में उपस्थित विद्वानों में - प्रो॰ अशोक कांबले *(*अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन और अनुसन्धान विभाग कर्नाटक*)*, डॉ॰ विशाल विक्रम सिंह *(*सहायक आचार्य, हिंदी विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर*)*, डॉ॰ आशीष सिसोदिया *(*सह आचार्य, हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर*)* तथा डॉ॰ नवीन नंदवाना *(*सह आचार्य, हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर*)* ने सिनेमा तथा अन्य माध्यमों का समाज तथा साहित्य से अंतर्संबंध विषय

पर अपने विचार व्यक्त किए।इस सत्र में विषय से संबंधित *10* पत्र आए।मुख्य वक्ता प्रो· अशोक कांबले ने साहित्य की भाषा एवं सिनेमा की विकास यात्रा पर चर्चा की।

तृतीय तकनीकी सत्र

दिनांक *07·10·2023* समय प्रात: *11:35* से *12:40*

स्थान : बप्पा रावल सभागार, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

सिनेमा तथा अन्य माध्यमों का सैद्धान्तिक एवं तकनीकी पक्ष

इसके बाद तृतीय तकनीकी सत्र प्रारम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ· मृत्युंजय सिंह *(*ओ·एस·डी· बंगाल सरकार, लेखक एवं निर्देशक*)* ने की। इसमें वक्ता के रूप में सुष्मिता सिंह *(*सह संस्थापक, उदयपुर टेल्स इंटरनेशनल स्टोरी टेलिंग फेस्टिवल*)*, डॉ· मुन्ना कुमार पांडे *(*सह आचार्य, हिंदी विभाग, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय*)* डॉ· संदेश महाजन *(*सहायक आचार्य, पी·डी·ई·यू· गांधीनगर, गुजरात*)* तथा डॉ· दीपा सोनी *(*सहायक आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर*)* उपस्थित रहे। इस सत्र का विषय था - **सिनेमा तथा अन्य माध्यमों का सैद्धांतिक एवं तकनीकी पक्ष** । इस सत्र में विषय से संबंधित *05* पत्र आए। डॉ· मृत्युंजय सिंह ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि भारतीय सिनेमा कला का एक अलग ही क्षेत्र है।विभिन्न कलाओं की तरह फिल्म निर्माण भी कला है। उन्होंने फिल्म निर्माण की सैद्धांतिकी को भी श्रोताओं को समझाया। इस अवसर पर डॉ· मृत्युंजय सिंह ने अपनी प्रसिद्ध कविता 'द्रौपदी' सुनाकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

संवाद सत्र

दिनांक *07·10·2023* समय *12:45* से *02:00*

स्थान *:* बप्पा रावल सभागार, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

सिनेमा तथा अन्य माध्यम *:* विविध आयाम

*(*पटकथा लेखन, गीत-संगीत, निर्देशन, छायांकन रिकार्डिंग, मार्केटिंग*)*

तत्पश्चात द्वितीय संवाद सत्र शुरू हुआ जिसका संचालन सोमेन्द्र हर्ष *(*निदेशक *(*RIIF*)*, जयपुर*)* ने किया। इस सत्र का विषय था- **सिनेमा तथा अन्य माध्यम *:* विविध आयाम *(*पटकथा लेखन, गीत-संगीत, निर्देशन, छायांकन रिकार्डिंग, मार्केटिंग*)***।इस सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में दिलीप सेन *(*प्रसिद्ध संगीतकार*)*, चिन्मय भट्ट *(*फिल्म निर्देशक, गीतकार, संगीतकार एवं पटकथा लेखक*)* तथा कपिल पालीवाल *(*गीतकार*)* ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। संगीतकार दिलीप सेन ने कहा कि जब तक फ़िल्में रहेंगी, संगीत रहेगा। संगीत फिल्म की रीढ़ है।

समापन सत्र

दिनांक *07·10·2023* समय *3:00* से *04:30*

स्थान *:* बप्पा रावल सभागार, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

हिंदी साहित्य, सिनेमा, समाज तथा अन्य माध्यम

समापन सत्र की अध्यक्षता सोमेन्द्र हर्ष ने की। मुख्य वक्ता के रूप में दिलीप सेन ने अपने संगीत एवं धुन की निर्माण प्रक्रिया के माध्यम से समां बांध दिया। उन्होंने गानों के माध्यम से दर्शकों का मन जीत लिया।उनहोंने कहा कि इस सृष्टि का संचालन तीन चीजों से होता है और वो है – सुर, लय और ताल।इन तीनों को मिलाकर ही संगीत बनता है। डॉ· आशीष सिसोदिया ने संगोष्ठी का प्रतिवेदन पढकर सुनाया। आयोजन सचिव डॉ· नीता त्रिवेदी ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन डॉ· नवीन नंदवाना ने किया। इसी के साथ दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन हुआ।

Programme Title: “Dabu Indigo Printing ”

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators: Yogesh Chhipa

Date: 12.04.2023

No. of Participants-50

Collaboration: Military Cant.

Objectives of the Programme:

- To teach individuals the traditional art and techniques of Dabu indigo printing
- To promote eco-friendly practices through Dabu printing, including the use of sustainable materials and dyeing methods.
- To provide a historical and cultural context for Dabu indigo printing, helping participants appreciate its significance.

Outcomes:

- Participants acquired the knowledge and skills needed to create intricate and beautiful prints.
- Participants explored their creativity and developed their own unique designs and patterns in Dabu printing.
- Learners achieved a deeper appreciation for the cultural and historical significance of Dabu printing, connecting with the tradition and heritage behind the art.
- Participants learned eco-friendly practices, encouraged to adopt sustainable and environmentally responsible methods in their printing process

Overview of the Programme:

The training was organised in a military cantt. area for the military men wives on 12th April 2023 with the objective of creating awareness about the traditional art of the Dabu printing among the women. The training was given by the locally trained artisan Mr Yogesh cheepa. His family is totally involved in this art. He explained every step by live demonstration of mud resist printing. Women themselves did this craft and enjoy a lot by creating scarfs, dupatta and kurta.

The incharge of the department Dr. Dolly Mogra threw light on the historical and cultural significance of the Dabu print and explained about its significance in this era of ever changing fashion world.

Annexure –2

Programme Title: " Mandala Art "

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Resource Person : Ms. Yogini Dak

Date: 2. 06.2023

No. of Participants-36

Collaboration:

Objectives of the Programme:

- To provide a platform for participants to express their creativity and emotions through the creation of mandala art.
- To promote an appreciation for the beauty and symmetry found in mandala art.
- To teach the techniques and skills needed to create intricate and visually appealing mandala designs.
- To educate participants about the cultural and historical significance of mandalas in various traditions.

Outcomes:

- Participants created their own unique mandalas, expressing their creativity and individuality.
- Participants achieved a better understanding of the cultural and spiritual significance of mandalas in various traditions.
- Mandala art workshops provided a platform of the participants to express themselves artistically.

Overview of the Programme:

The workshop was organized by the Department of Fashion Technology and Designing on 2nd June 2023 for the 36 participants at Nehru hostel. The resource person for the training was Yogini Dak. She is a trained creative artist. Under the workshop the students were to explode about the mandala art. She finely demonstrated the art of mandala and also told about the key points in making fine and perfect mandala art. The training was basically organised to improve the skill of the students and also to enable them to start their own enterprise by using this historical and traditional technique of mandala. In this workshop the students prepared various samples in different shapes and sizes.

Dr. Dolly Mogra Incharge Department of Fashion Technology and Designing gave the detailed information regarding the importance and its use in this present era of globalization and also told the students how they can use this technique to start their own enterprise.

Programme Title: " Clay Pot Making "

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Resource Person: Ms. Yogini Dak

Date: 3 June 2023

No. of Participants- 36

Objectives of the Programme:

- To Provide a hands-on experience for participants to create their own clay pots.
- To Develop participants' skills in shaping, decorating, and firing clay pots.
- To Teach participants the traditional art of pottery and clay pot making.
- Potentially support local artisans and the pottery industry by encouraging interest in handmade pottery.

Outcomes:

- Participants acquired skills in working with clay, hand-building techniques, and pottery craftsmanship.
- Completing a clay pot boosted participants' self-esteem and sense of achievement.

Overview of the Programme:

The workshop was organized on 3rd June 2023 for the 36 participants at Nehru hostel. The resource person for the training was Yogini Dak. She is a trained creative artist. Under the workshop the students were explored about the various techniques of pot decoration with clay moulds and different styles of painting on the pot. The training is basically organised to improve the skill of the students and also to enable them to start their own enterprise by using this artistic way of creating pots and other items of decoration. In this workshop the students prepared various types of pots and decorative items by using clay and other techniques.

Dr. Dolly Mogra Incharge Department of Fashion Technology and Designing gave the detailed information regarding the importance and its use in this present era of globalization and also tell the students that by using their creativity they can develop many decorative items which are in demand .

Programme Title: “ Lippan Art ”

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators: Dimple Jain, Priyanka Jain

Date: 21 July2023

No. of Participants-50

Collaboration:

Objectives of the Programme:

- To acquaint students with the traditional Lippan art.
- To improve their creativity.
- To enhance their skill in lippan art.

Outcomes:

- They prepare many products by lippan art technique.
- Their speed of making products was also increased.
- Participants achieved a better understanding of the cultural and spiritual significance of lippan art in various traditions.
- Lippan art workshops provided a platform of the participants to express themselves artistically.

Overview of the Programme:

On 27th july 2023 a vibrant Lippan Art Training Workshop was conducted at Nehru hostel for 50 students], bringing together art enthusiasts and learners eager to explore the traditional folk art form of Lippan. The workshop aimed to provide hands-on training, fostering creativity and preserving the rich cultural heritage associated with this distinctive art.

The workshop included interactive sessions where participants could ask questions, seek guidance, and engage in discussions with the instructor i.e Dimple and Priyanka. This fostered a collaborative learning environment and allowed for a deeper understanding of Lippan art.

Participants were encouraged to express their creativity through both individual and group projects. This not only provided a platform for personal artistic expression but also promoted teamwork and camaraderie among the participants.

Towards the end of the workshop, an exhibition of the participants' Lippan art creations was organized. This showcase allowed participants to appreciate each other's work, share their experiences, and celebrate the diversity of artistic expressions within the Lippan art tradition.The Lippan Art Training Workshop proved to be an enriching and culturally immersive experience for all participants. It not only imparted practical skills in Lippan art but also provided a deeper appreciation for the cultural heritage embedded in this traditional folk art form

Programme Title: “Tri Colour Dupatta Making Workshop ”

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators: Rekha Purohit

Date: 12.08.2023

No. of Participants-50

Collaboration:

Objectives of the Programme:

- To enhance knowledge about the mass production method.
- To learn how to complete a big order in a small time.
- To acquaint them with the raw material procurement.

Outcomes:

- They learned and practiced the mass production process.
- They get an understanding about the importance of time in completing order.
- They gained insight knowledge about raw material purchase.
- They prepare nice tri colour dupatta on time.

.

Overview of the Programme

On 12th August 2023, a "Tri Colour Dupatta Making Workshop" was organized under the guidance of the Department of Fashion Designing and Technology. The workshop aimed to celebrate the cultural diversity of our nation through the creation of tri-color dupattas, symbolizing the Indian flag.

Fifty enthusiastic participants gathered to learn and engage in the art of dupatta making. The workshop commenced with Dr. Dolly Mogra's opening remarks, emphasizing the importance of cultural expression and creativity.

Participants were provided with materials including fabric in saffron, white, and green colors, along with various embellishments such as sequins, beads, and embroidery threads. Under the expert guidance of Rekha Purohit and her team, participants learned different techniques including tie-dye, embroidery, and fabric painting to adorn their dupattas.

Throughout the workshop, participants displayed remarkable creativity, experimenting with different designs and patterns. The atmosphere was filled with joy and camaraderie as participants shared ideas and techniques with each other.

By the end of the workshop, each participant had successfully crafted their own unique tri-color dupatta, representing the spirit of unity in diversity.

Dr. Dolly Mogra concluded the event by congratulating the participants on their creativity and encouraging them to continue exploring their artistic talents.

The "Tri Colour Dupatta Making Workshop" was not only a celebration of artistic expression but also a reminder of the rich cultural heritage that unites us as a nation. It served as a platform for individuals to come together, learn, and celebrate our shared identity.

The success of the workshop would not have been possible without the dedication and guidance of Dr. Dolly Mogra and her team, as well as the enthusiasm and active participation of all the participants.

Overall, the workshop was a resounding success, leaving a lasting impact on all those who attended, and showcasing the power of creativity and unity in fostering cultural appreciation.

Programme Title: " Rakhi Making"

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators: Rekha Purohit

Date: 21.08.2023

No. of Participants- 36

Collaboration:

Objectives of the Programme:

- To enhance their creativity.
- To develop the skill of rakhi making.
- To sensitize students about the hand made rakhi.

Outcomes:

- Students rakhi making skill was developed
- Their creativity was also improved.
- They start earning by selling their handmade rakhi.
- They understand the importance of handmade rakhi.

.

Overview of the Programme:

On 21st August 2023, a delightful Rakhi Making Workshop was organized at Nehru Hostel in which 36 students engage in the creative and traditional art of crafting Rakhi. The workshop aimed to celebrate the spirit of Raksha Bandhan, promote creativity, and provide an opportunity for participants to make personalized Rakhis for their loved ones.

The workshop began with an introduction to various materials used in Rakhi making, including threads, beads, sequins, and decorative elements. Different techniques such as braiding, beadwork, and embroidery were demonstrated to give participants a diverse range of options for creating their Rakhis.

To guide participants, expert Ms. Rekha Purohit and Ms. Chanda Sharma were invited to demonstrate advanced techniques and share tips for creating intricate and visually appealing

Rakhis. These demonstrations added value to the workshop by showcasing professional craftsmanship.

The Rakhi Making Workshop proved to be a delightful and engaging event, successfully achieving its objectives of promoting creativity and celebrating the cultural significance of Raksha Bandhan. Participants left the workshop not only with beautifully crafted Rakhis but also with a sense of pride in their creative abilities.

The success of the workshop underscored the importance of hands-on activities in celebrating festivals and connecting with cultural traditions. Participants expressed their appreciation for the opportunity to create personalized Rakhis, reinforcing the sentiment behind the festival of Raksha Bandhan – a celebration of love, protection, and the bond between siblings.

Programme Title: “ Textile Surface embellishment ”

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Resource person: Sophia

Date: 5-7 Sep.2023

No. of Participants-55

Collaboration:

Objectives of the Programme:

- Introduce participants to various techniques for surface embellishment.
- Teach participants how to enhance the appearance of surfaces through decorative methods.
- Provide hands-on experience with different tools and materials used in surface embellishment.
- Empower participants to incorporate embellishment techniques into their own artistic or design practices.
- Encourage collaboration and sharing of ideas among workshop participants

Outcomes:

- Improved skills in applying decorative methods.
- Increased creativity and experimentation.
- Expanded knowledge of tools and materials.
- Empowered participants to incorporate techniques into their own work.

Overview of the Programme:

The programme was organised between 5-7 sep 2023 at Nehru hostel . The resource person of the workshop was Ms. Sophia . She taught three different surface ornamentation techniques to students-

1. Fabric painting
2. Kuch embroidery with three D outliner
3. Cutwork

Students enthusiastically participated in this workshop and prepared the article from each technique.

The co ordinator of the workshop Dr. Dolly Mogra gave detailed information about the implication of these techniques in fashion garments. She also guide the students about the importance of traditional work on apparel in India as well as around the world.

Programme Title: " Clay Art: Ganesha "

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators: Rekha Purohit , Samiksha Sharma

Date: 17 Sep.2023

No. of Participants-80

Collaboration:

Objectives of the Programme:

- To send a message of eco friendly environment .
- To develop the skill of making Ganesha from clay among the students.
- To develop their creativity.

Outcomes:

- Eco-Friendly handmade Ganesha made by the students.
- Confidence was developed amongst students
- Students gained huge exposure from this workshop.

Overview of the Programme:

A one-day workshop on making eco-friendly Ganesh idol was organized in the Fashion Technology and Designing Department of Mohanlal Sukhadia University. Under the direction of art teacher Yogini Dak, As an innovation, seeds were put in the soil of the statues being made so that after immersion the seeds could germinate and take the form of plants and help in environmental protection.

Dr. Dolly Mogra, in-charge of the department, said that the department has been moving forward in environmental protection since the beginning and on the auspicious occasion of Ganesh Chaturthi, it has led the students towards innovation by putting seeds in the clay Ganesh idols made by the students.

Programme Title: Terracotta Creations

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators: Dr. Sonu, Dr Rupali & Dr. Mamta

Date: 6.11.23 & 7.11.23

No. of Participants- 200

Collaboration:

Objectives of the Programme:

- Introduce the history and significance of terracotta.
- Provide hands-on experience in terracotta techniques.
- Foster creativity and artistic expression.
- Facilitate networking and collaboration.

Outcomes:

- Enhanced understanding of terracotta's cultural importance.
- Development of practical terracotta skills.
- Increased creativity and expression through artwork.
- Networking opportunities within the artistic community.

Overview of the Programme:

The Terracotta Workshop coordinated by Dr. Dolly Mogra was held on November 6th and 7th, 2023, with a total of 200 participants in attendance. The workshop aimed to introduce participants to the art and techniques of working with terracotta.

Throughout the two-day event, participants engaged in hands-on activities guided by experienced instructors, learning various methods of shaping, molding, and decorating terracotta creations. Dr. Dolly Mogra, along with her team of facilitators, provided Mr. Ghasiram comprehensive demonstrations and personalized assistance to ensure a fulfilling learning experience for all attendees.

The workshop covered fundamental techniques such as coil building, slab construction, and wheel throwing, allowing participants to explore their creativity and experiment with different forms and designs. Additionally, sessions on surface decoration techniques including carving,

painting, and glazing provided participants with a well-rounded understanding of terracotta artistry.

Interactive discussions and presentations by guest speakers further enriched the workshop, offering insights into the historical significance and contemporary applications of terracotta in art and architecture. Participants were encouraged to exchange ideas, share their experiences, and seek inspiration from one another, fostering a collaborative and supportive learning environment.

Overall, the Terracotta Workshop led by Dr. Dolly Mogra and her team was a resounding success, providing participants with valuable skills, knowledge, and inspiration to further explore the versatile medium of terracotta in their artistic pursuits. The event received positive feedback from participants, highlighting its effectiveness in promoting creativity, craftsmanship, and cultural appreciation within the community.

Programme Title: “Phad Painting”

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators: Dr. Meenaxi Mishra

Date: 26-27.10.23

No. of Participants-45

Collaboration:

Objectives of the Programme:

- Introduce students to the traditional art form of Phad painting, originating from Rajasthan, to promote cultural awareness and appreciation.
- To promote innovations and creativity.
- To raise the potentiality of the students.
- To encourage and build confidence among the new students.
- To provide an platform to showcase their talent

Outcomes:

- Students acquire and improve their painting techniques, gaining proficiency in the intricate details of Phad painting.
- Increase their cultural awareness towards Phad Painting.
- Increase in the Self confidence of the students.
- Talents and skills of the students have been Identified

Overview of the Programme:

The workshop on Phad Painting, organized by Dr. Dolly Mogra and Dr. Meenaxi Mishra, took place on 26-27 October 2023. The event aimed to introduce participants to the traditional art form of Phad Painting, originating from Rajasthan, India.

Day 1:

Dr. Dolly Mogra provided an overview of the history and cultural significance of Phad Painting.

Dr. Meenaxi Mishra demonstrated the traditional techniques and materials used in Phad Painting, including the use of natural pigments and cloth canvas.

Participants were guided through the initial stages of creating their own Phad Paintings, learning basic strokes and patterns.

Day 2:

Dr. Meenaxi Mishra led a session on advanced techniques in Phad Painting, including intricate detailing and color mixing.

Participants continued working on their own Phad Paintings, with guidance and feedback from the coordinators.

A mini-exhibition was organized where participants displayed their finished Phad Paintings, followed by a discussion on the experience and challenges faced during the workshop.

The workshop fostered appreciation for traditional art forms and encouraged participants to continue exploring and preserving such cultural heritage.

The workshop on Phad Painting was a resounding success, thanks to the efforts of Dr. Dolly Mogra, Dr. Meenaxi Mishra, and the enthusiastic participation of 45 attendees. It not only provided valuable insights into a traditional art form but also served as a platform for cultural exchange and artistic expression.

Traditional Wall Hanging (Birds)

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators:

Date: 13.2.2024 – 16.2.2024

No. of Participants-15

Collaboration:

Objectives of the Programme:

- To teach participants traditional techniques for creating wall hangings featuring bird motifs.
- To enhance skills in textile art and craft.
- To foster appreciation for traditional craft and design methods.

Outcomes:

- The students were able to try their creativity in making traditional wall hanging.
- They learned the technique and art of creating wall hangings.

Overview of the programme:

The "Traditional Wall Hanging (Birds)" programme, coordinated by Dr. Dolly Mogra from February 13 to February 16, 2024, engaged 15 participants in crafting traditional wall hangings. The workshop focused on techniques for designing and creating wall hangings with bird motifs, emphasizing traditional methods and craftsmanship. Participants received step-by-step instruction, including guidance on materials, patterns, and execution. The event concluded with an exhibition of the participants' work, showcasing their creativity and newly acquired skills. The programme successfully blended traditional art with practical learning, allowing participants to create unique decorative pieces and gain deeper insight into textile arts.

Report of the International Conference on
"Minerals, Mining and Metallurgy in South Asia: Historical Perspectives",
dated 11-12 January, 2024

The International Conference on "Minerals, Mining and Metallurgy in South Asia: Historical Perspectives" was organised on 11 - 12 January 2024 by the Department of History, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur at the Golden Jubilee Guest House of MLSU. The proposal of the conference was submitted to ICSSR on 27 September 2023. Rajasthan States Mines and Minerals Limited, Wonder Cement, and Hindustan Zinc Limited agreed to help in the conference. The conference brochure and invitation was sent to many Universities of India and abroad. About 71 abstracts were received and 50 of them were taken for presentation in the conference. There were about 40 physical participants and the rest of the papers were discussed online.

The inaugural session began at 10:30 AM on 11 January 2024 at the Conference Hall, Guest house. On the dais were Chief Guest: Lieutenant General Anil Kapoor AVSM, VSM Retired, Keynote Speaker: Padmashri Professor Sharada Srinivasan (Professor, School of Humanities, National Institute of Advanced Studies, Indian Institute of Science Campus, Bangalore; International Honorary Member, American Academy of Arts and Sciences; Member, Advisory Board, Exeter University; Hon. Exeter University Fellow; Member, Advisory Board, Institute of Archaeometallurgical Studies, London; Dr. Kalpana Chawla Woman Scientist Awardee; Padmashri Awardee in Archaeology.), Guest Speaker: Dr. Shri Krishna Jugnu, Guest of Honour: Prof. Chulani Rambukwella from Sri Lanka (Chair Professor of Archaeology, Department of Archaeology, University of Peradeniya, Sri Lanka) Professor Sunita Mishra, HVC, MLSU, Prof. Pratibha, HOD and Dr. Peeyush Bhadviya, Conference Convener. In the audience were distinguished guests, participants, and students of History Department.

After all technical sessions, Valedictory session was conducted from 5:15 pm to 6: 30 pm. It was chaired by Prof. Pooranmal Yadav, Faculty Chairman, Social Sciences, MLSU, Chief Guest was Brig. Sandeep Kumar, VSM, Valedictory Address was given by Prof. Jeevan Singh Kharakwal from Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth, Prof. Pratibha, HOD, History, MLSU and Dr. Peeyush Bhadviya was also on dais.

Participants from Foreign Nations: Dr. Naira Mrktchyan from **Armenia** (Diplomat, T.V. Anchor, Writer, Orientalist, Lecturer, Northern University, Yerevan, Republic of

14/01/2024

HEAD
Department of History
Mohanlal Sukhadia Univ

Armenia.), Prof. Poonam R.L. Rana from **Nepal** (Associate Professor, Nepalese History Culture & Archaeology, Tribhuvan University, Nepal), Prof. Chulani Rambukwella (Chair Professor of Archaeology, Department of Archaeology, University of Peradeniya, Sri Lanka), Upeksha Gamage (Senior Lecturer, Department of History and Archaeology, University of Ruhuna, Sri Lanka.), Dr. Sonali Dasnayke (Lecturer, Department of History and Archaeology, University of Ruhuna, Sri Lanka.), Dr. R.M.N.P.K. Jayasinghe (Gem and Jewellery Research and Training Institute, Welivita, Kaduwela & Postgraduate Institute of Science, University of Peradeniya, Peradeniya, Sri Lanka) from **Sri Lanka ;** Online Participants : Prof. Som Prasad (Professor, Central Department of Nepalese History, Culture and Archaeology Tribhuvan University, Nepal) from **Nepal**, Alkesh Zaveri from **U.S.A.,** Githa U.B. from **Sweden.**

Participants from India **1 JAMMU:** Dr. Anita Gupta (Assistant Professor, Department of History, Central University, Jammu, JKUT, India.), Dr. Tirthraj Bhoi (Assistant Professor, Department of History, Faculty of Social Sciences, University of Jammu, Jammu, JKUT, India.) **2 UTTAR PRADESH:** Dr. D.P. Sharma (B.H.U., Varanasi, Uttar Pradesh, India.), Dr. Madhuri Sharma (B.H.U., Varanasi, Uttar Pradesh, India.), Dr. Ravindra Kumar (Assistant Professor, Department of Ancient History, Culture and Archaeology, University of Allahabad, Prayagraj, Uttar Pradesh, India.) **3 UTTARAKHAND:** Prof. Yogambar Singh Farswan (Professor in Environmental Archaeology, Department of History, Ancient Indian History, Culture and Archaeology, Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University (A Central University), Srinagar Garhwal, Uttarakhand, India), Dilshad Fatima (Ph.D. Research Scholar, University of Allahabad, Prayagraj, Uttar Pradesh, India.) **4 HARYANA**: Prof. Bhagat Singh (Professor, Department of Ancient Indian History, Culture & Archaeology, Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana, India.), Prof. Rajpal Singh (Professor, Department of Ancient Indian History, Culture & Archaeology, Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana, India.) and Ms. Monu (Ph.D. Research Scholar, Department of Ancient Indian History, Culture & Archaeology, Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana, India.) **5 DELHI:** Dr. Rimjhim Sharma (Assistant Professor, Department of History, PGDAV College, Nehru Nagar, New Delhi, India.), Dr. Vandana Singh (Kalasampada, New Delhi, India), Lt. Gen. Anil Kapoor, AVSM, VSM, Grp. Capt. R.S. Mehta SC (General Secretary, Indus International Research Foundation, New Delhi, India.), Debyani Mukherjee (M.A. Anthropology, IGNOU, Delhi & M.A. Archaeology, Indian Institute of Heritage, Noida, Uttar Pradesh, India.), **6 GUJARAT:** Prof. Arun Vagehla (Professor, Department of History, Gujarat University, Ahmedabad, Gujarat, India.), Dr. Nandan Shastri (Freelance Museologist-cum-Geologist, Gujarat, India.), Dr. Dinesh Pancholi (Freelance Museologist-cum-Geologist,

Gujarat, India.), Dr. Rita Parikh (Associate Professor, Department of Sanskrit, Mr. and Mrs. P.K. Kotwala Arts College, Patan, Gujarat, India.), Dr. Meena Agrawal (Assistant Professor, History Department, Mr. and Mrs. P.K. Kotwala Arts College, Patan, Gujarat, India.), Dr. Bhangraj Choudhary (Assistant Professor, History Department, Arts College, Deesa, Gujarat, India.) **7 MAHARASHTRA:** Prof. Madhu Kelkar (Professor, Department of Foundation Course, HR College of Commerce and Economics, Churchgate, Mumbai, Maharashtra, India), Dr. Nandita Moitra (Assistant Professor, Guru Nanak College of Arts, Science and Commerce, Guru Tegh Bahadur Nagar, Sion, Mumbai, Maharashtra, India.), Dr. Madhumita Bandopadhyay (Smt. P.N. Doshi Women's College, Ghatkopar, Mumbai, Maharashtra, India), Dr. Shaikh Musak Rajjak (Associate Professor & Head, Department of History, Maulana Azad College of Arts, Science & Commerce, Aurangabad, Maharashtra, India), Dr. Kazi Yasmin Papamiya (Faculty Member, Department of History, Maulana Azad College of Arts, Science & Commerce, Aurangabad, Maharashtra, India), Dr. Balaji Chirade (Associate Professor, Department of History, Central University, Warda, Maharashtra, India) **8 GOA:** Prof. Louisa Rodrigues **9 KARNATAKA:** Padmashri Prof. Sharada Srinivasan (Professor, School of Humanities, National Institute of Advanced Studies, Indian Institute of Science Campus, Bangalore; International Honorary Member, American Academy of Arts and Sciences; Member, Advisory Board, Exeter University; Hon. Exeter University Fellow; Member, Advisory Board, Institute of Archaeometallurgical Studies, London; Dr. Kalpana Chawla Woman Scientist Awardee; Padmashri Awardee in Archaeology.), Brigradier Sandeep Kumar VSM (President Indus International Research Foundation New Delhi, India), Lt. Gen. C.A. Krishnan PVSM, UYSM, AVSM (online) **10** KERALA: Ahira Chandra Babu (Ph.D. Research Scholar, Department of Sanskrit Sahitya, Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady, Kerala, India.) (online) **11** TAMIL NADU: Dr. S. Vasanthi (Deputy Superintending Archaeologist (retd.)), Dr. Rajesh (Assistant Professor, Kongunadu Arts and Science College, Coimbatore, Tamil Nadu, India.) and Dr. Rajalakshmi (Assistant Professor, Department of Tamil, Kongunadu Arts and Science College, Coimbatore, Tamil Nadu, India.) **12 RAJASTHAN:** Dr. Hansmukh Seth (Associate Curator, The City Palace Museum, Udaipur, Rajasthan, India.), Dr. Arvind Kumar (Geological Survey of India, Field Training Centre, Zawar, Udaipur, Rajasthan, India), Dr. Shrikrishna Jugnu (Renowned historian, Udaipur, Rajasthan, India.), Dr. A.K. Grover (Dy. D.G. (Retired), Geological Survey of India) (online) Dr. P.R. Golani (Formerly Director, Training Institute, Geological Survey of India, Zawar Centre, Udaipur, Rajasthan, India.) (online), Dr. Suman Rathore (Associate Professor

Government College, Khairwada, Udaipur, Rajasthan, India.), Mangilal Mahawar (Assistant Professor Government Post Graduate College, Dausa, Rajasthan, India.), Mohit Shankar Sisodia (Ph.D. Research Scholar, Department of History, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, Rajasthan, India.), Kriti Kataria (Ph.D. Research Scholar, Department of History, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, Rajasthan, India.), Suresh Kumar (Ph.D. Research Scholar, Department of History, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, Rajasthan, India.)

The following sessions were conducted

Day 1st: 11.01.2024

Plenary Session – 1: Conference Hall

Time: 01 P.M. to 02:50 P.M.

Session Chair: Prof. Louiza Rodrigues

1	Archaeometallurgy of Copper Hoard in India	Dr. D.P. Sharma
2	Mineral Resources of Sri Lanka : An Archaeological and Historical Review	Prof. Chulani Rambukwella
3	Silver Mines from the 4th millennium BCE : A Global Perspective	Dr. Nandan Shastri
4	The Mineral Kingdom (Focus on Jewellery) & its Symbolic Values in Nepal	Dr. Poonam R.L. Rana

Tea

Parallel Technical Session - 1: Conference Hall

Time 3 P.M. to 04:30 P.M.

Session Chair: Prof. Arun Vaghela & Dr. Nandita Moitra

1	Copper Workings and Ritual Artefacts in the Chotanagpur Region: A Survey of Typological Variations	Dr. Rimjhim Sharma
2	Historical Significance Conveyed by Coins	Dr. A. Rajalakshmi
3	The Metal Objects Revealed from Archaeological Excavations in Tamil Nadu and their Historical Significances	Dr. S. Vasanthi
4	प्राचीन भारत में धातुकर्म विरासत	डॉ. शीतल ए. अग्रवाल
5	Archaeometallurgy of Buddhist Metal Images of Central India	Dr. Madhuri Sharma

Tea

Parallel Technical Session - 2: Meeting Hall

Time: 3 P.M. to 04:30 P.M.

Session Chair: Dr. Nandan Shastri & Dr. Shaikh Musak Rajjak

1	आयुर्वेद में धातुओं और खनिजों का उपयोग (चरक संहिता के संदर्भ में)	डॉ. रीटा एच. पारेख
2	Foreign Travelogues as Source of Indian Gemmological Knowledge System	Dr. Kazi Yasmin Papamiya
3	Sands at Risk: Analyzing Consequences and Paving the Way for Sustainability	Kriti Kataria
4	Harappan Metals and its Sound Beauty	Dilshad Fatima
5	Mines and Metallurgy during Mauryan Period	Debyani Mukherjee

Tea

Plenary Session – 2: Conference Hall

Time: 04:45 P.M. to 06:45 P.M.

Session Chair: Prof. Yogambar Singh Farswan

1	New insights into the metallurgy of Rajghat Iron (600-400 BCE) from the Middle Ganga plains of India	Dr. Vandana Singh
2	Exploring the Indian Knowledge System: Advanced Metallurgy and Copper Extraction Techniques in the Himalayas	Dr. Amita Gupta
3	Rituals and Traditions : The Spiritual Dimensions of Gem Mining Practices in Sri Lanka	Dr. Sonali Dasanayake & Dr. Upeksha Gamage
4	Sedimentology and Geochemistry of Kalu River Gem-bearing Sediments in Sri Lanka: Implication for Provenance and Paleoclimate	R.M.N.P.K. Jayasinghe
5	Documentation Issues of Objects, Ornaments, Tools, Weapons During Maratha Period	Dr. Balaji Chirade
6	Belt and Road Initiative : A Quest for Mineral and Energy in South Asia	Gp. Captain (Retd.) R.S. Mehta

Dinner

Day 2nd: 12.01.2024

Breakfast

Online Parallel Technical Session - A: Conference Hall

Time: 9 A.M. to 10:45 A.M.

Session Chair: Gp. Captain (Retd.) R.S. Mehta, SC & Dr. Naira Mkrtchyan

1	Archaeological Heritage and its management in Eastern Nepal	Prof. Som Prasad Khatiwada
2	Ancient Gold Mines of Bhukia and Hinglaz Mata-Bharkundi Prospects in South Rajasthan and their Probable Antiquity	Dr. Ashok Kumar Grover
3	Ancient and Medieval Mining and Metallurgy and its Significance in the History of Rajasthan	Dr. P.R. Golani
4		Lt. Gen. C.A. Krishnan
5	Unveiling Karnataka's Golden Past: Ancient Mining Technologies	Dr. Harihara Sreenivasa Rao

Online Parallel Technical Session - B: Meeting Hall

Time: 9 A.M. to 10:45 A.M.

Session Chair: Prof. Madhu Kelkar & Dr. Balaji Chirade

1	Use of Iron in Jammu and Kashmir : An Ethnographic Study of Megalithic Sites	Dr. Tirthraj Bhoi
2	Diseases and Miners: Coal Mines of Raniganj and Jharia in the Late Colonial Period	Dr. Sandip Chatterjee
3	जयपुर के कच्छवाहा राजवंश के सैन्य हथियार और धातुकर्म	डॉ. सुमन राठौड़ एवं मांगीलाल महावर
4	A Study of Indigenous Brass Metal Handicraft & Industry of Hajo, Assam	Dimpy Talukdar
5	Sculptures as Repertoire of Mineral Resources : With special Reference to Abaneri, Rajasthan	Deepika Ravjani
6	Gemstones and Cultural Exchange : Indian Gemstone Trade Along the Maritime Silk Road	Pallavi Mohanan
7	Unmasking the Veil of Gender : Women in Underground Mines	Apeksha Gandotra
8	Mercury in Rasaratnasamuccaya : Retrieving Lost Traditions	Athira Chandrababu
9	Mines, Minerals and Colonial Institutions in India : Some Observations on the Asiatic Society of Bengal and Geological Survey c. 1780s–1880s	Himadri Mukherjee

10	*Pañcaloha* : A Metallurgical Analysis of a Five-Metal Alloy from the *Tantrasamuccaya*	Devahar V.

Plenary Session – 3: Conference Hall

Time: 11 A.M. to 1 P.M.

Session Chair: Dr. D.P. Sharma

1	An Overview of the History of Metallurgy in the Indian Subcontinent	Prof. Yogambar Singh Farswan
2	Coalescing Development: Coal Trade and Technology in British India with special reference to Bombay Presidency (1774-1947)	Prof. Madhu Kelkar
3	Metal and Metallurgy in Painted Grey Ware Phase (With Special Refrence to Satluj Yamuna Divide)	Monu & Dr. Bhagat Singh
4	Agate Industry in Cambay: A Historical Perspective and Present Context	Prof. Arun Vaghela
5	A Comparative Study Between Ancient and Modern Pyrometallurgical Techniques Related to Extraction of Zinc from Sphalerite-rich Ores: A Global Perspective	Dr. Arvind Kumar

Lunch

Plenary Session – 4: Conference Hall

Time: 2 P.M. to 3:30 P.M.

Session Chair: Prof. Bhagat Singh

1	A Study of Harappan Metal Kilns in the Eastern Domain with Special Reference to Haryana	Neelam Sharma & Prof. Rajpal Singh
2	An Insight into the Intriguing Journey of Diamonds in India from Past to Present	Dr. Nandita Moitra
3	Iron Foundry at Poonassa: Debates, Deliberations and Outcomes	Dr. Madhumita Bandyopadhyay
4	Thakkar Pheru: A Shrimal Jain Expert on Gemology, Numismatics & Metallurgy in Medieval India	Dr. Shaikh Musak Rajjak
5	Metallurgy in Ancient Armenia : Export of Metallic Items to Eastern and Western Countries	Dr. Naira Mkrtchyan

Tea

Plenary Session – 5: Conference Hall

Time: 3:45 P.M. to 4:45 P.M.

Session Chair: Prof. Rajpal Singh

1	Traditional Practices of the use of Minerals and Metals in Ayurvedic Medicines, with Special Reference to the Pre-medieval Period	Dr. Ravindra Kumar
2	Ancient Metal Coin Minting Techniques in Ancient Sri Lanka: Metals, Methods, and Administrative Insights	Dr. Upeksha Gamage & Dr. Sonali Dasanayake
3	Mines and Minerals in South Rajasthan	Dr. Hansmukh Seth
4	Mineral Resources of Southern Rajasthan, An Attraction to Ancient Civilization Settlements (Evidenced by Presence of Ancient Mining Activity Along Archaean Proterozoic Boundary)	Diksha Pande, N.K. Chauhan, Abhay S. Dashora, Kavita Bharadwaj

Tea

Photos

Minerals, Mining and Metallurgy in South Asia: Historical Perspectives
Department of History
Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, India

INTERNATIONAL CONFERENCE
Department of History
Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, India

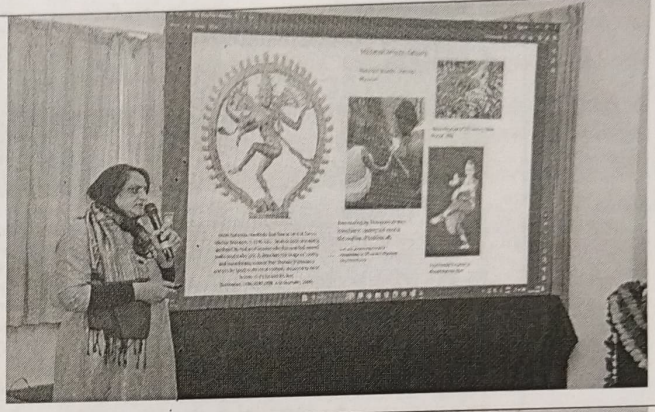

Minerals, Mining and Metallurgy in South Asia: Historical Perspectives
Department of History
Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, India

Newspapers

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का पोस्टर विमोचन

उदयपुर। सुविवि के इतिहास विभाग द्वारा 11 एवं 12 जनवरी को मिनरल्स, माइनिंग एंड मेटालर्जी इन साउथ एशिया- हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव्स विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के पोस्टर का विमोचन कुलपति प्रो. सुनीता मिश्रा ने किया। संगोष्ठी समन्वयक डॉ पीयूष भादविया ने बताया कि इसमें विशिष्ट व्याख्यान सहित करीब 60 शोधपत्रों की प्रस्तुति होगी। देश-विदेश से 60 प्रतिभागी उदयपुर आ रहे हैं। आने वाले विद्वानों में अर्मेनिया, नेपाल एवं श्रीलंका के प्रोफेसर शामिल हैं। भारत के 14 राज्यों से प्रतिनिधि उदयपुर में होंगे। मुख्य रूप से पद्मश्री प्रो. शारदा श्रीनिवासन, प्रो. चुलानी रामबुकवाला, प्रो. पूनम राणा, प्रो. योगंबर सिंह, प्रो. भगतसिंह, प्रो. प्रोजीत कुमार पलीत, प्रो. अंबिका ढाका, प्रो. देवप्रकाश शर्मा, प्रो लुईसा रोड्रिग्स, प्रो. वीनस जैन, प्रो. जीवन खरकवाल, डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, डॉ. नाइरा मार्कच्यान आदि संगोष्ठी के विषय पर प्रकाश डालेंगे।

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के पोस्टर का विमोचन

उदयपुर. मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय की ओर से इतिहास विभाग की 11 एवं 12 जनवरी को मिनरल्स, माइनिंग एंड मेटलर्जी इन साउथ एशिया: हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव्स विषय पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी होगी।

शनिवार को इसके पोस्टर का विमोचन कुलपति प्रो. सुनीता मिश्रा ने किया। सामाजिक विज्ञान संकाय अध्यक्ष प्रो. पूरणमल यादव, इतिहास विभागाध्यक्ष प्रो. प्रतिभा, डॉ पीयूष भादविया, डॉ विनीत सोनी, राकेश जैन उपस्थित थे। संगोष्ठी समन्वयक डॉ पीयूष भादविया, सहायक आचार्य ने बताया की विशिष्ट व्याख्यान सहित करीब 60 शोधपत्रों की प्रस्तुति होगी। इसमें अर्मेनिया, नेपाल एवं श्रीलंका के प्रोफेसर शामिल होंगे। भारत के 14 राज्यों से प्रतिनिधि उदयपुर आएंगे। मुख्य रूप से पद्मश्री प्रो. शारदा श्रीनिवासन, प्रो. चुलानी रामबुकवाला, प्रो. पूनम राणा, प्रो. योगंबर सिंह, प्रो. भगतसिंह, प्रो. प्रोजीत कुमार पलीत, प्रो. अंबिका ढाका, प्रो. देवप्रकाश शर्मा आदि संगोष्ठी में शामिल होंगे।

दैनिक भास्कर

उदयपुर 12-01-2024

दैनिक भास्कर

उदयपुर

संगोष्ठी • माइनिंग एंड मेटलर्जी इन साउथ एशिया पर दो दिवसीय आयोजन शुरू, विशेष सत्र में बोले वक्ता

दक्षिण राजस्थान में धातुओं की कई खानें, इसलिए आक्रमणकारियों के लिए हमेशा रण बना रहा मेवाड़

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

दक्षिण राजस्थान एशिया महाद्वीप में समृद्धि का सूचक रहा है। संसार के व्यापारियों और धातुविदों की पैनी नजर इस क्षेत्र के जावर, दरीबा, आगूचा जैसी खानों पर रही और हजार वर्ष पहले भी कर्नाटक, गुजरात, पंजाब, सिंध आदि के व्यापारी मेवाड़ आकर बसे, जो राजकीय संरक्षण में धातुओं का व्यापार कर संसार की औद्योगिक और सामाजिक प्रगति के सूत्रधार बने।

यह विचार सुविवि में मिनरल्स, माइनिंग एंड मेटलर्जी इन साउथ एशिया पर आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में विशेषज्ञों ने रखे। हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव्स विषय पर आयोजित संगोष्ठी के पहले दिन गुरुवार को पद्मश्री प्रसिद्ध धात्विक इतिहासकार प्रो. शारदा श्रीनिवासन ने कहा कि धातु केवल धन ही नहीं, मानवीय संस्कृति के उन्नति का बोधक भी है। धातु हमारे अलंकरण, मूर्ति, द्वार आदि के लिए उपयोगी रहे और भारत में हर युग में धातु का महत्व रहा है। इतिहास, हमारे व्यापार और संबंधों को भी यदि परिभाषित करता है तो उसके मूल के धातु और धन ही हैं। मेवाड़ की धरती इसका पर्याय है। विशिष्ट वक्ता श्रीलंका की प्रो. चुलानी रामबुकवेला ने कहा कि राजस्थान की खनिज सम्पदा पर संसार की नजर रहती है। यह धातु की धरती है। लंका, कर्नाटक आदि के अभिलेखीय प्रमाण धातु और संबंधों को समझने के लिए बड़े उपयोगी हैं।

मेवाड़ के प्रसिद्ध इतिहास और संस्कृतिविद् डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू ने मेवाड़ को धात्विक खनिज सम्पदा की भूमि बताया और दरी, दरीबा, जावर, आगूचा, भूखिया आदि में प्राचीन काल से ही हो रही खनन गतिविधियों को इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण बताया। उनका कहना था कि धात्विक समृद्धि के कारण ही मेवाड़ ढाई हजार वर्षों तक आक्रमणकारियों के लिए रण बना रहा।

धातु की उपलब्धि और समृद्धि, देशों की उन्नति को परिभाषित करती

मुख्य अतिथि ले. जनरल अनिल कपूर ने कहा कि धातु की उपलब्धि और समृद्धि, देशों की उन्नति को परिभाषित करती है, कोहिनूर एक उदाहरण है। खानें हमें समृद्ध बनाने वाली रही हैं। यह विषय हमें नई पीढ़ियों को पढ़ाने चाहिए, क्योंकि यह आत्मनिर्भरता के सुन्दर उपाय हैं। सुविवि कुलपति प्रो. सुनीता मिश्रा ने कहा कि धातु और उसकी धारणा को हम कोई कभी नहीं भूल सकते, क्योंकि ये हमारे दैनिक जीवन से जुड़े हुए हैं। विभागाध्यक्ष प्रो. प्रतिभा ने देश-विदेश से आने वाले शोधार्थियों, अध्येताओं का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन दीपांशी धाकड़ व सुचिता हिरण ने किया। डॉ. भादविया द्वारा संपादित एनीमल्स इन साउथ एशियन हिस्ट्री और भारतीय इतिहास में पशु-पक्षी तथा संगोष्ठी की स्मारिका विमोचन किया गया। इस संगोष्ठी में आर्मेनिया की डॉ. नानरा मकर्चयन, नेपाल की प्रो. पूनम आर.एल. राणा, श्रीलंका से डॉ. सोनाली दसनायके, डॉ. दसनायके, डॉ. उपेक्षा गमांग, प्रो. चुलानी रामबुकवेला, नलिन जयसिंहे सहित भारत के 14 राज्यों से प्रतिनिधि शामिल हुए हैं।

पत्रिका

कचरा इधर-उधर फेंका रहती है।

बाजारों में वाहनों पार्किंग में ही खड़े करवाए जाएं। शहर का जनसंख्या के आधार पर किया जाए।

#MLSUniversity सुविवि में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

मेवाड़ की खनिज सम्पदा समृद्धि की पर्याय

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर . दक्षिण राजस्थान संपूर्ण एशिया में समृद्धि का सूचक रहा है। संसार के व्यापारियों एवं धातुविदों की दृष्टि इस क्षेत्र के जावर, दरीबा, आगूचा आदि खानों पर रही और हजार वर्ष पहले भी कर्नाटक, गुजरात, पंजाब, सिंध आदि के व्यापारी मेवाड़ आकर बसे, जो राजकीय संरक्षण में धातुओं का व्यापार कर संसार की औद्योगिक और सामाजिक प्रगति में सूत्रधार बने। यह विचार गुरुवार को सुखाड़िया विश्वविद्यालय में शुरू हुई 'मिनरल्स, माइनिंग एंड मेटेलर्जी इन साउथ एशिया हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव्स' विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में देश-विदेश से आए विद्वानों ने व्यक्त किए। मुख्य अतिथि ले. जनरल अनिल कपूर ने कहा कि धातु की उपलब्धि और समृद्धि देशों की उन्नति को परिभाषित करती है, कोहिनूर एक उदाहरण है। अध्यक्षता कर रही कुलपति प्रो. सुनिता मिश्रा ने कहा कि धातु और उसकी धारणा को हम कोई कभी नहीं भूल सकते, क्योंकि ये हमारे दैनिक जीवन से जुड़े हुए हैं। उद्घाटन सत्र में पद्मश्री से अलंकृत धात्विक इतिहासकार प्रो. शारदा श्रीनिवासन ने कहा कि धातु केवल धन ही नहीं, मानवीय संस्कृति के उन्नति के द्योतक भी हैं। विशिष्ट वक्ता श्रीलंका की प्रो. चुलानी रामबुकवेला ने कहा कि राजस्थान की खनिज सम्पदा पर संसार की नजर रहती है। यह धातु की धरती है। इतिहासकार डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने मेवाड़ की धात्विक खनिज सम्पदा की भूमि बताया। विभागाध्यक्ष प्रो. प्रतिभा ने संगोष्ठी की उपयोगिता बताई। संचालन दीपाक्षी धाकड़ एवं सुचित्रा हिरण ने किया। उद्घाटन पर डॉ. पीयूष भादविया द्वारा संपादित एनिमल्स इन साउथ एशियन हिस्ट्री और भारतीय इतिहास में पशु-पक्षी तथा संगोष्ठी की स्मारिका विमोचन अतिथियों ने किया। संगोष्ठी में अर्मेनिया की डॉ. नायरा मर्कचयन, नेपाल की प्रो. पूनम आरएल राणा, श्रीलंका से डॉ. सोनाली दसनायके, डॉ. दसनायके, डॉ. उपेक्षा गमांग, प्रो. चुलानी रामबुकवेला, नलिन जयसिंह सहित भारत के 14 राज्यों से प्रतिनिधि शामिल हुए।

सुखाड़िया विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में स्मारिका विमोचन करते अतिथि।

12/01/2024 | Udaipur City | Page : 6
Source : https://epaper.patrika.com/

उदयपुर, सोमवार 15 जनवरी 2024 6

बाजार / समाचार

मेवाड़ की खनिज संपदा समृद्धि की पर्याय

उदयपुर। खनिज संसाधन, खदान और धात्विकी के आर्थिक एवं वैज्ञानिक महत्व पर यहां सुखाड़िया विश्व विद्यालय में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें वक्ताओं का मत था कि दक्षिण राजस्थान अपनी खानों के कारण संपूर्ण एशिया में समृद्धि का सूचक रहा है। संसार के व्यापारियों एवं धातुविदों की दृष्टि इस क्षेत्र के जावर, दरीबा, आगूचा आदि खानों पर रही और हजार वर्ष पहले भी कर्नाटक, गुजरात, पंजाब, सिंध आदि के व्यापारी मेवाड़ आकर बसे, जो राजकीय संरक्षण में धातुओं का व्यापार कर संसार की औद्योगिक और सामाजिक प्रगति में सूत्रधार बने।

इस संगोष्ठी के प्रायोजक आईसीएसएसआर, आरएसएमएमएल, बंदर सीमेन्ट एवं हिन्दुस्तान जिंक थे। उद्घाटन सत्र में पद्मश्री से अलंकृत प्रसिद्ध धात्विक इतिहासकार प्रो. शारदा श्रीनिवासन ने कहा कि धातु केवल धन ही नहीं, मानवीय संस्कृति के उन्नति के द्योतक भी है। धातु हमारे अलंकरण, मूर्ति, द्वार आदि के लिए उपयोगी रहे और भारत में हर युग में धातु का महत्व रहा। इतिहास, हमारे व्यापार और संबंधों को भी यदि परिभाषित करता है, तो उसके मूल के धातु और धन ही है। मेवाड़ की धरती इसका पर्याय है।

प्रारम्भ में संगोष्ठी समन्वयक डॉ. पीयूष भादविया, (सहायक आचार्य, इतिहास विभाग) ने खनिज, धातु और धातु शोधक तकनीक विषय पर संगोष्ठी की उपयोगिता बताई। इतिहासकार डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने मेवाड़ की धात्विक खनिज सम्पदा की भूमि बताया और दरी, दरीबा, जावर, आगूचा, भुखिया (बांसवाड़ा) आदि में प्राचीन काल से ही हो रही खनन गतिविधियों को इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण बताया। उनका कहना था कि धात्विक समृद्धि के कारण ही मेवाड़ ढाई हजार वर्षों तक आक्रमणकारियों के लिए रण बना रहा। इस क्षेत्र के चर्चे बसरा के सौदागर 8 वीं सदी में कर रहे थे।

विशिष्ट वक्ता श्रीलंका की प्रो. चुलानी रामबुकवेला ने कहा कि राजस्थान की खनिज सम्पदा पर संसार भर की नजर रहती है। यह धातु की धरती है। लंका, कर्नाटक आदि के अभिलेखीय प्रमाण धातु और सम्बन्धों को समझने के लिये बड़े उपयोगी हैं।

मुख्य अतिथि ले. जनरल अनिल कपूर ने कहा कि धातु की उपलब्धि और समृद्धि, देशों की उन्नति को परिभाषित करती है, कोहिनूर एक उदाहरण है। खाने हमें समृद्ध बनाने वाली रही है। यह विषय हमें नई सीढ़ियों को पढ़ाने चाहिए, क्योंकि यह आत्मनिर्भरता के सुन्दर उपाय है।

अध्यक्षता कर रही सुविधि की कुलपति प्रो. सुनिता मिश्रा ने कहा कि धातु और उसकी धारणा को हम कोई कभी नहीं भूल सकते, क्योंकि ये हमारे दैनिक जीवन से जुड़े हुए है। धातु से किसी को अलगाव अच्छा नहीं लगता है। मेवाड़, धातु के मूल्य को समझता है और इसी दृष्टि से इस संगोष्ठी का महत्व है। इसकी चर्चा और महत्व आने वाला समय सिद्ध करेगा।

संगोष्ठी की उपयोगिता को विभागाध्यक्ष प्रो. प्रतिभा ने प्रतिपादित की और देश-विदेश से आने वाले शोधार्थियों, अध्येताओं का स्वागत किया। डॉ. जीवन सिंह खरकवाल ने भारत में उपलब्ध खदानों और खनिजों का सुंदर विवरण दिया और कहा की 24 कैरेट की मान्यता सिंधु घाटी ने संसार को दी है। इस अवसर पर डॉ. पीयूष भादविया द्वारा संपादित 'एनिमल्स इन साउथ एशियन हिस्ट्री', 'भारतीय इतिहास में पशु-पक्षी' तथा संगोष्ठी की स्मारिका का विमोचन किया गया।

इस संगोष्ठी में अर्मेनिया की डॉ. नायरा मर्कचयन, काठमांडू (नेपाल) की प्रो. पूनम आर. एल. राणा, श्रीलंका से डॉ. सोनाली दसनायके, डॉ. दसनायके, डॉ. उपेक्षा गमांग, प्रो. चुलानी रामबुकवेला, नलिन जयसिंहे सहित भारत के 14 राज्यों के प्रतिनिधियों की भागीदारी रही। बाद में इतिहासकारों ने जावर और चित्तौड़गढ़ का भ्रमण भी किया।

–डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू

मेवाड़ की खनिज सम्पदा समृद्धि की पर्याय

धातु, खान और तकनीक का आर्थिक एवं वैज्ञानिक महत्व

सुविवि में खनिज, खदान एवं धात्विकी पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू

उदयपुर (पुकार)। दक्षिण राजस्थान संपूर्ण एशिया में समृद्धि का सूचक रहा है। संसार के व्यापारियों एवं धातुविदों की दृष्टि इस क्षेत्र के जावर, दरीबा, आगूचा आदि खानों पर रही और हजार वर्ष पहले भी कर्नाटक, गुजरात, पंजाब, सिंध आदि के व्यापारी मेवाड़ आकर बसे, जो राजकीय संरक्षण में धातुओं का व्यापार कर संसार की औद्योगिक और सामाजिक प्रगति में सूत्रधार बने।

यह विचार गुरुवार को सुखाड़िया विश्वविद्यालय में आरम्भ हुई ''मिनरल्स, माईनिंग एंड मेटेलर्जी इन साउथ एशिया हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव्स'' विषयक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश-विदेश से आए विद्वानों ने प्रकट किए। संगोष्ठी के प्रायोजक आईसीएचआर, आरएसएमएमएल, वंडर सीमेन्ट एवं हिन्दुस्तान जिंक है।

मुख्य अतिथि ले. जनरल अनिल कपूर ने कहा कि धातु की उपलब्धि और समृद्धि, देशों की उन्नति को परिभाषित करती है, कोहिनूर एक उदाहरण है। खाने हमें समृद्ध बनाने वाली रही है। यह विषय हमें नई पीढ़ियों को पढ़ाने चाहिए, क्योंकि यह आत्मनिर्भरता के सुन्दर उपाय है। अध्यक्षता कर रही सुविवि की कुलपति प्रो. सुनिता मिश्रा ने कहा कि धातु और उसकी धारणा को हम कोई कभी नहीं भूल सकते, क्योंकि वे हमारे दैनिक जीवन से जुड़े हुए है। धातु से किसी को अलगाव अच्छा नहीं लगता है। मेवाड़, धातु के मूल्य को समझता है और इसी दृष्टि से इस संगोष्ठी का महत्व है।

उद्घाटन सत्र में पद्मश्री से अलंकृत प्रसिद्ध धात्विक इतिहासकार प्रो. शारदा श्रीनिवासन ने कहा कि धातु केवल धन ही नहीं, मानवीय संस्कृति के उन्नति के बोधक भी है। धातु हमारे अलंकरण, मूर्ति, द्वार आदि के लिए उपयोगी रहे और भारत में हर युग में धातु का महत्व रहा। इतिहास, हमारे व्यापार और संबंधों को भी यदि परिभाषित करता है, तो उसके मूल के धातु और धन ही है। मेवाड़ की धरती इसका पर्याय है।

प्रारम्भ में संगोष्ठी समन्वयक इतिहास विभाग के सहायक आचार्य,, डॉ. पीयूष भादविया ने खनिज, धातु और धातु शोधक तकनीक विषय पर संगोष्ठी की उपयोगिता बताई। विशिष्ट वक्ता श्रीलंका की प्रो. चुलानी रामबुकवेला ने कहा कि राजस्थान की खनिज सम्पदा पर संसार भर की नजर रहती है। यह धातु की धरती है। लंका, कर्नाटक आदि के अभिलेखीय प्रमाण धातु और संबंधों को समझने के लिये बड़े उपयोगी हैं। इतिहासकार डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू ने मेवाड़ को धात्विक खनिज सम्पदा की भूमि बताया और दरी, दरीबा, जावर, आगूचा, भूखिया आदि में प्राचीन काल से ही हो रही खनन गतिविधियां को इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण बताया। उनका कहना था कि धात्विक समृद्धि के कारण ही मेवाड़ ढाई हजार वर्षों तक आक्रमणकारियों के लिए रण बना रहा।

संगोष्ठी की उपयोगिता को विभागाध्यक्ष प्रो. प्रतिभा ने प्रतिपादित की और देश-विदेश से आने वाले शोधार्थियों, अध्येताओं का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन दीपांशी धाकड़ एवं सुचिता हिरण ने किया। संगोष्ठी के उद्घाटन के अवसर पर डॉ. पीयूष भादविया द्वारा संपादित ''एनिमल्स इन साउथ एशियन हिस्ट्री'' और ''भारतीय इतिहास में पशु-पक्षी'' तथा संगोष्ठी की स्मारिका विमोचन भी अतिथियों द्वारा किया गया। इस संगोष्ठी में अर्मेनिया की डॉ. नायरा मर्कचियन, नेपाल की प्रो. पूनम आर.एल. राणा, श्रीलंका से डॉ. सोनाली दसनायके, डॉ. दसनायके, डॉ. उपेक्षा गमांग, प्रो. चुलानी रामबुकवेला, नलिन जयसिंह सहित भारत के 14 राज्यों से प्रतिनिधि शामिल हो रहे है।

मेवाड़ की खनिज सम्पदा समृद्धि की पर्याय

धातु, खान और तकनीक का आर्थिक एवं वैज्ञानिक महत्व, सुविवि में खनिज, खदान एवं धात्विकी पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू

उदयपुर(युग की आवाज)। दक्षिण राजस्थान संपूर्ण एशिया में समृद्धि का सूचक रहा है। संसार के व्यापारियों एवं धातुविदों की दृष्टि इस क्षेत्र के जावर, दरीबा, आगूचा आदि खानों पर रही और हजार वर्ष पहले भी कर्नाटक, गुजरात, पंजाब, सिंध आदि के व्यापारी मेवाड़ आकर बसे, जो राजकीय संरक्षण में धातुओं का व्यापार कर संसार की औद्योगिक और सामाजिक प्रगति में सूत्रधार बने।

यह विचार गुरुवार को सुखाड़िया विश्वविद्यालय में आरम्भ हुई मिनरल्स, माईनिंग एंड मेटेलर्जी इन साउथ एशिया हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव्स विषयक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश-विदेश से आए विद्वानों ने प्रकट किए। संगोष्ठी के प्रायोजक आईसीएचआर, आरएसएमएमएल, वंडर सीमेन्ट एवं हिन्दुस्तान जिंक है।

मुख्य अतिथि ले. जनरल अनिल कपूर ने कहा कि धातु की उपलब्धि और समृद्धि, देशों की उन्नति को परिभाषित करती है, कोहिनूर एक उदाहरण है। खाने हमें समृद्ध बनाने वाली रही है। यह विषय हमें नई पीढ़ियों को पढ़ाने चाहिए, क्योंकि यह आत्मनिर्भरता के सुन्दर उपाय है। अध्यक्षता कर रही सुविवि की कुलपति प्रो. सुनिता मिश्रा ने कहा कि धातु और उसकी धारणा को हम कोई कभी नहीं भूल सकते, क्योंकि वे हमारे दैनिक जीवन से जुड़े हुए है। धातु से किसी को अलगाव अच्छा नहीं लगता है। मेवाड़, धातु के मूल्य को समझता है और इसी दृष्टि से इस संगोष्ठी का महत्व है।

उद्घाटन सत्र में पद्मश्री से अलंकृत प्रसिद्ध धात्विक इतिहासकार प्रो. शारदा श्रीनिवासन ने कहा कि धातु केवल धन ही नहीं, मानवीय संस्कृति के उन्नति के बोधक भी है। धातु हमारे अलंकरण, मूर्ति, द्वार आदि के लिए उपयोगी रहे और भारत में हर युग में धातु का महत्व रहा। इतिहास, हमारे व्यापार और संबंधों को भी यदि परिभाषित करता है, तो उसके मूल के धातु और धन ही है। मेवाड़ की धरती इसका पर्याय है। प्रारम्भ में संगोष्ठी समन्वयक इतिहास विभाग के सहायक आचार्य,, डॉ. पीयूष भादविया ने खनिज, धातु और धातु शोधक तकनीक विषय पर संगोष्ठी की उपयोगिता बताई। विशिष्ट वक्ता श्रीलंका की प्रो. चुलानी रामबुकवेला ने कहा कि राजस्थान की खनिज सम्पदा पर संसार भर की नजर रहती है। यह धातु की धरती है। लंका, कर्नाटक आदि के अभिलेखीय प्रमाण धातु और संबंधों को समझने के लिये बड़े उपयोगी हैं। इतिहासकार डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू ने मेवाड़ को धात्विक खनिज सम्पदा की भूमि बताया और दरी, दरीबा, जावर, आगूचा, भूखिया आदि में प्राचीन काल से ही हो रही खनन गतिविधियों को इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण बताया। उनका कहना था कि धात्विक समृद्धि के कारण ही मेवाड़ ढाई हजार वर्षों तक आक्रमणकारियों के लिए रण बना रहा। संगोष्ठी की उपयोगिता को विभागाध्यक्ष प्रो. प्रतिभा ने प्रतिपादित की और देश-विदेश से आने वाले शोधार्थियों, अध्येताओं का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन दीपांशी धाकड़ एवं सुचिता हिरण ने किया। संगोष्ठी के उद्घाटन के अवसर पर डॉ. पीयूष भादविया द्वारा संपादित एनिमल्स इन साउथ एशियन हिस्ट्री और भारतीय इतिहास में पशु-पक्षी तथा संगोष्ठी की स्मारिका विमोचन भी अतिथियों द्वारा किया गया। इस संगोष्ठी में अर्मेनिया की डॉ. नायरा मर्कचियन, नेपाल की प्रो. पूनम आर.एल. राणा, श्रीलंका से डॉ. सोनाली दसनायके, डॉ. दसनायके, डॉ. उपेक्षा गमांग, प्रो. चुलानी रामबुकवेला, नलिन जयसिंह सहित भारत के 14 राज्यों से प्रतिनिधि शामिल हो रहे है।

दैनिक भास्कर उदयपुर 13-01-2024

सुविवि • अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के आखिरी दिन वक्ताओं ने कहा-

धातु देशों को धनी बनाते रहे हैं तो जीवन के संस्कारों व स्वास्थ्य के लिए भी जरूरी

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

संगोष्ठी में मौजूद वक्ता।

खनिज, खदान और उनसे जुड़ी प्रौद्योगिकी संसार की समृद्धि के लिए आवश्यक है। धातु यदि देशों को धनी बनाते रहे हैं तो जीवन के संस्कारों और स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। ये विचार सुविवि में हुई दो दिन की मिनरल्स, माइनिंग एंड मेटलर्जी इन साउथ एशिया : हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव्स विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के आखिरी दिन शुक्रवार को वक्ताओं ने व्यक्त किए।

संगोष्ठी में एशिया के अनेक देशों से आए विद्वानों ने अनेक सत्रों में अपने शोधपत्रों को पढ़ा और सिद्ध किया कि धातु, धन और धरती के लिए अनेक लड़ाइयां हुई हैं लेकिन अब मानवता के संरक्षण के लिए खनिज संसाधनों का उपयोग करना चाहिए। विशिष्ट अतिथि ब्रिगेडियर सी संदीप कुमार ने कहा कि हमें इस दौर में अनेक सावधानियां रखने की जरूरत है और हमें उद्यमिता और उद्योग ही नहीं, खनिज, खान आदि के विषय में गंभीर अध्ययन के लिए सोचना होगा। यह समय की आवश्यकता भी है। संगोष्ठी में अमेरिका से नन्दन शास्त्री, आर्मेनिया की डॉ. नायरा मर्कचयन, श्रीलंका से डॉ. सोनाली दसनायके, डॉ. उपेक्षा गमांग, प्रो. चुलानी रामबुक्वेला, नलिन जयसिंहे भी शामिल रहे।

मुख्य वक्ता प्रसिद्ध पुराविद् प्रो. जीवनसिंह खरकवाल ने प्राचीन भारत में खनन कार्य और खनिज संसाधनों की उपलब्धि को महत्वपूर्ण बताया और कहा कि भारत में धातुओं की प्राप्ति संसारभर को चकित करती है। नेपाल की प्रो. पूनम आरएल राणा ने कहा कि यह संगोष्ठी छात्रों के लिए ही नहीं, विद्वानों के लिए भी बहुत प्रेरक रही है। धातु भारत ही नहीं, नेपाल तक भी जीवन के संस्कारों से जुड़े हुए हैं।

सुविवि के प्रो. पूरणमल यादव ने कहा कि समृद्धि देने वाले धातु स्वास्थ्य के साथक भी हैं। कार्यक्रम की रिपोर्ट संगोष्ठी समन्वयक डॉ. पीयूष भादविया ने प्रस्तुत की। संगोष्ठी में 55 पत्रों का पत्रवाचन किया गया। भारत के 14 राज्यों के प्रतिनिधि और श्रीलंका, आर्मेनिया व नेपाल से प्रतिनिधियों ने भी शोध पत्रों का वाचन किया। इस अवसर पर पद्मश्री प्रो. शारदा श्रीनिवासन, डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित आदि मौजूद थे।

दैनिक नवज्योति Udaipur City - 13 Jan 2024 - Page 4

खनिज, खदान संसार की समृद्धि के लिए आवश्यक

सुविवि में खनिज, खदान एवं धात्विकी पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। खनिज, खदान और उनसे जुड़ी प्रौद्योगिकी संसार की समृद्धि के लिए आवश्यक है। धातु यदि देशों को धनी बनाते रहे हैं तो जीवन के संस्कारों और स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। भारतीय चिंतकों ने धातुओं के बहुदृष्टि उपयोग पर विचार किया है। यह विचार यहां सुखाड़िया विश्वविद्यालय में शुक्रवार संपन्न मिनरल्स, माईनिंग एंड मेटलर्जी इन साउथ एशिया: हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव्स विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में उभरे। इस संगोष्ठी में एशिया के अनेक देशों से आए विद्वानों ने शोधपत्रों का वाचन किया। विशिष्ट अतिथि ब्रिगेडियर (रि.) सी. संदीप कुमार ने कहा कि हमें उद्यमिता और उद्योग ही नहीं, खनिज, खान आदि के विषय में गंभीर अध्ययन के लिए सोचना होगा। मुख्य वक्ता प्रसिद्ध पुराविद प्रो. जीवनसिंह खरकवाल ने प्राचीन भारत में खनन कार्य और खनिज संसाधनों की उपलब्धि को महत्वपूर्ण बताया। नेपाल की प्रो. पूनम आर. एल. राणा ने कहा कि यह संगोष्ठी छात्रों के लिए ही नहीं, विद्वानों के लिए भी बहुत प्रेरक रही है। अध्यक्षता सुविवि के संकाय अध्यक्ष प्रो. पूरणमल यादव ने की। संगोष्ठी में पद्मश्री प्रो. शारदा श्रीनिवासन, डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित, डॉ. डी.पी. शर्मा, प्रो. भगतसिंह, प्रो. राजपाल, प्रो. अरूण बाघेला, प्रो. दिग्विजय भटनागर, विभागाध्यक्ष प्रतिभा, डॉ. वन्दनासिंह डॉ. समीर व्यास, डॉ. हसमुख सेठ, मोहित शंकर सिसोदिया, दिलावरसिंह, सुरेश कुमार, कृति कटारिया, प्रवेश कुमार, उमेश आदि उपस्थित रहे। संचालन निकिता खड़ेलवाल, दीपाक्षी धाकड एवं सुचिता हिरण ने किया। संगोष्ठी समन्वयक डॉ. पीयूष भादविया ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

चोरी एवं अन्य अपराधों में कमी आएगी

धातुओं का चिकित्सा में प्रयोग भारत का मानवीय चिंतन

उदयपुर . खनिज, खदान और उनसे जुड़ी प्रौद्योगिकी संसार की समृद्धि के लिए आवश्यक है। धातु यदि देशों को धनी बनाते रहे हैं तो जीवन के संस्कारों और स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। भारतीय चिंतकों ने धातुओं के बहुदृष्टि उपयोग पर विचार किया है। यह बात सुखाड़िया विश्वविद्यालय में 'मिनरल्स, माइनिंग एंड मेटेलर्जी इन साउथ एशिया : हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव्स' विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी मे उभरे। संगोष्ठी में एशिया के अनेक देशों से आए विद्वानों ने शोध पत्रों को पढ़ा और सिद्ध किया कि धातु, धन और धरती के लिए अनेक लड़ाइया हुई हैं, लेकिन अब मानवता के संरक्षण के लिए खनिज संसाधनों का उपयोग करना चाहिए। संगोष्ठी समन्वयक डॉ. पीयूष भादविया ने बताया कि कुल 55 पत्रों का पत्रवाचन हुआ। भारत के 14 राज्यों के प्रतिनिधि एवं श्रीलंका, आर्मेनिया एवं नेपाल से प्रतिनिधियों ने शोध पत्रों का वाचन किया। विशिष्ट अतिथि ब्रिगेडीयर (रि.) सी. संदीप कुमार ने कहा कि हमें इस दौर में अनेक सावधानियां रखने की जरूरत है। उद्यमिता और उद्योग ही नहीं, खनिज, खान आदि के विषय में गंभीर अध्ययन के लिए सोचना होगा। मुख्य वक्ता प्रसिद्ध पुराविद प्रो. जीवनसिंह खरकवाल ने प्राचीन भारत में खनन कार्य और खनिज संसाधनों की उपलब्धि को महत्वपूर्ण बताया।

दैनिक भास्कर

चित्तौड़गढ़ भास्कर 14-01-2024

भ्रमण • दुर्ग और जावर माइंस क्षेत्र का भ्रमण कर इतिहास, पुरातत्व पर करेंगे शोध

14 देशों के प्रोफेसर शोध भ्रमण पर चित्तौड़ आए

भास्कर संवाददाता | चित्तौड़गढ़

उदयपुर के माणिक्य लाल वर्मा विश्वविद्यालय में मिनरल, माइनिंग मेटल और मेट्रोलॉजी ऑफ साउथ एशिया पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में शामिल 14 देशों के प्रतिनिधि शनिवार को यहां पहुंचे। इनमें अधिकांश प्रोफेसर है। सबसे पहले विधायक चंद्रभासिंह आक्या से भेंटकर चित्तौडगढ़ इतिहास की बातें साझा की। उनका इसके बाद दुर्ग भ्रमण कर इतिहास व संस्कृति का अध्ययन करने का प्रोग्राम है।

संस्थान सदस्यों और विधायक आक्या ने उपरना व मेवाड़ी पगड़ी पहनाकर परस्पर अभिनंदन किया। विधायक ने कहा कि कि गत वर्ष इसी संस्थान की एनिमल्स इन द हिस्ट्री ऑफ साउथ एशिया विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में वे भी शामिल हुए थे। इस बार सदस्यों का चित्तौडगढ़ भ्रमण का निर्णय सराहनीय है। इससे यह भक्ति, शक्ति, त्याग व बलिदान की धरती और अधिक विश्वपटल पर आएगी। भारत का यह सबसे बड़ा किला प्राचीन इतिहास की याद दिलाता है। यहां के शासकों व वीरांगनाओं ने स्वाभिमान से कभी समझौता नहीं किया। महाराणा प्रताप, कुंभा, सांगा, रानी पद्मिनी, पन्नाधाय व मीरा की प्रसिद्धि जगजाहिर है। क्षत्राणियों का जौहर मन को झकझोर देता है। रवि विराणी, महेंद्र सिंह, मुकेश मेघवाल आदि ने प्रतिनिधि मंडल का स्वागत किया।गत वर्ष की अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी पश्चात संस्थान द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकें भारतीय इतिहास में पशु-पक्षी व एनमिल्स इन साउथ एशियन हिस्ट्री की प्रति विधायक आक्या को भेंट की गईं।

विधायक चंद्रभानसिंह आक्या से मिलकर चित्तौड़गढ़ के इतिहास की ली जानकारी, मेवाड़ी पगड़ी पहनाकर स्वागत किया

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के निदेशक माणिक्य लाल वर्मा विश्वविद्यालय के सह आचार्य डॉ. पीयूष भादविया ने बताया कि सेमिनार में आर्मेनिया, अमेरिका, नेपाल, श्रीलंका व भारत सहित 14 देशों व दक्षिण भारत के प्रतिनिधि शामिल है। जो चित्तौड़ दुर्ग और जावर माइंस क्षेत्र का भ्रमण कर प्राचीन संस्कृति, इतिहास, पुरातत्व संस्कृति आदि पर शोध करेंगे। श्रीलंका से नीलम जयासिंघे, आर्मेनिया से डॉ. लुईजा रॉड्रिक्स व डॉ. नायरा, काठमांडू नेपाल से डॉ. पूनम राणा, सेंट्रल यूनिवर्सिटी जम्मू की डॉ. अमिता गुप्ता, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी की दिलशाद फातिमा, डॉ. डीपी शर्मा व डॉ. माधुरी शर्मा वाराणसी, डॉ. रविंद्र कुमार इलाहाबाद, प्रो. योगेंबर सिंह व सुमन रानी उत्तराखंड आदि प्रमुख संभागी प्रतिनिधि उपस्थित थे।

14/01/2025

HEAD
Department of History
Mohan Lal Sukhadia University
Udaipur

Traditional Wall Hanging (Birds)

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators:

Date: 13.2.2024 – 16.2.2024

No. of Participants-15

Collaboration:

Objectives of the Programme:

- To teach participants traditional techniques for creating wall hangings featuring bird motifs.
- To enhance skills in textile art and craft.
- To foster appreciation for traditional craft and design methods.

Outcomes:

- The students were able to try their creativity in making traditional wall hanging.
- They learned the technique and art of creating wall hangings.

Overview of the programme:

The "Traditional Wall Hanging (Birds)" programme, coordinated by Dr. Dolly Mogra from February 13 to February 16, 2024, engaged 15 participants in crafting traditional wall hangings. The workshop focused on techniques for designing and creating wall hangings with bird motifs, emphasizing traditional methods and craftsmanship. Participants received step-by-step instruction, including guidance on materials, patterns, and execution. The event concluded with an exhibition of the participants' work, showcasing their creativity and newly acquired skills. The programme successfully blended traditional art with practical learning, allowing participants to create unique decorative pieces and gain deeper insight into textile arts.

Programme Title: Costume Design for Design Show

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators:

Date: 01-01-2024-15.02.2024

No. of Participants-40

Objectives of the Programme:

- To teach and enhance skills in costume design for fashion shows.
- To provide practical experience in creating costumes that align with design show themes.
- To prepare participants for showcasing their designs in a professional setting.

Outcomes :

- The participants gained an understanding of the costume design industry.
- The programme helped students to consider this field as a career option.

Overview of the programme:

The "Costume Design for Design Show" programme, coordinated by Dr. Dolly Mogra and running from January 1 to February 15, 2024, focused on equipping participants with skills in costume creation tailored for fashion shows. The programme included workshops on design principles, fabric selection, and construction techniques. Participants engaged in hands-on practice, working on costumes that would be featured in an upcoming design show. The course culminated in a showcase where students presented their costumes, demonstrating their technical skills and creativity. The event provided valuable exposure and practical experience, helping participants refine their design abilities in a real-world context.

Programme Title: Male Tailoring

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators:

Date: 27.02.2024- 14.03.2024

No. of Participants- 25

Collaboration:

Objectives of the Programme:

- To teach basic and advanced male tailoring skills.
- To equip participants with practical skills in garment construction and fitting.
- To provide hands-on experience in tailoring techniques and pattern making.

Outcomes :

- The participants usually engaged in female garments gained a great opportunity to understand male garment construction.
- The participants understood the drafting and construction of male garments.

Overview of the programme:

The Male Tailoring programme, held from February 27 to March 14, 2024, and coordinated by Dr. Dolly Mogra with the help of co-coordinators, successfully engaged 25 participants. The course covered a range of tailoring techniques, including fabric selection, pattern drafting, and garment assembly. Participants received practical training through demonstrations and hands-on practice, culminating in the creation of tailored garments. The programme also included individual feedback sessions to enhance tailoring skills. Overall, the event provided valuable technical skills and practical experience in male tailoring, contributing to the participants' professional development in the field.